अध्याय:- 1

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

✓ प्रमुख जनसंचार माध्यम:-

(1) प्रिंट माध्यम (मुद्रण कार्य) - लिपि का क्रमशः आविष्कार

* पिक्टरोग्राफी (चित्रलिपि) - प्रागैतिहासिक काल में, चित्रों की श्रृंखला के माध्यम से किसी घटना या स्थिति का स्वरूप प्रस्तुत करना, चित्रलिपि भाषा से जुड़ी नहीं थी।

* ऑडियोग्राफी - पिक्टोग्राफी/ चित्रलिपि का संवर्धित रूप, इसमें वस्तुओं और स्थितियों के चित्रण के साथ, उनमें संबंधित विचारों और संबंधो को भी अभिव्यक्त किया जाने लगा।

उदाहरण:- छोटा सा वृत, सूर्य का प्रतिनिधित्व करना = चित्रलिपि/पिक्रोग्राफी

- उसमें ताप, प्रकाश और दिन का बोध कराना = ऑडियोग्राफी किन्तु यह भी भाषा का रूप नहीं

• [मेसोपोटामिया, कीट तथा हिंदी आइट लिपि ध्वनि आधारित लिपि सम्मिलित हुई]

* लोगोग्राफी - प्रत्येक शब्द के लिए स्वतंत्र चिह था, इस लिपि को शब्द लेखन कह सकते हैं

- पत्तों, मिट्टी की पतली इंटों, पत्थर चमड़े पर लिखकर भ प्रकट करना ।

* कागज का आविष्कार चीन के साँई लुन द्वारा सन् 105 में (सर्वप्रथम) वृक्षों की कुटी हुई छाल, पुराने कपड़े और मछली पकड़ने के पुराने जालों के उपयोग से कागज बनाया।

* 7 वीं शताब्दी में यह कला जापान पहुंची और बौध भिक्षुओं ने मलबरी वृक्ष की छाल से कागज बनाना आरम्भ किया।

- इसी देश में साँचो से मुद्रण शुरु हुआ।

- साम्राज्ञी शोटोकु की आज्ञा से छह वर्षों में 10 लाख प्रार्थना पत्र छापे।

* वास्तविक मुद्रण की शुरुआत - गुटेनबर्ग (जर्मनी) से 1400-1468 के बीच (428 पंक्तियों की बाइबिल - दुनियाँ की पहली छपी हुई पुस्तक)

नोट:- कुछ विद्वान दुनिया की पहली छपी हुई - कोरियाई धार्मिक पुस्तक को मानते हैं।

* भारत में पहला छापाखाना- 1556 ई. गोवा में खुला।

By Chalia Sir

उद्देश्य:- मिशनरियों द्वारा इसाई धर्म की पुस्तकें छापने के लिए।

नोट:- मुद्रण कार्य की मूल शक्ति है - छपे हुए शब्दों का स्थायित्व होना।

- मुद्रण या लिखित भाषा की सबसे बडी विशेषता है - अनुशासन अर्थात् भाषा, व्याकरण वर्तनी और शब्दों के उपयुक्त, इस्तेमाल का ध्यान रखना

मुद्रित माध्यम की विशेषता:-

1. शब्दों का स्थायीत्व

2. शब्दों का अनुशासन (शुद्ध वर्तनी, व्याकरण सम्मत)

3. चिंतन विचार विश्लेषण का माध्यम (गृढ़ विचारों को लिखित रूप में प्रकट करना)

नोट:- मुद्रित माध्यम की प्रमुख सीमा है - निरक्षर इसे पढ़ नहीं सकते ।

(2) रेडियो ('रेडिओ' शुद्ध शब्द) - यह एक श्रव्य माध्यम है (लेखन के अलावा अन्य जानकारी पूर्व में कर चुके हैं)

आविष्कार - 1895 - जी. मार्कोनी

- रेडिओ समाचार लेखन प्रक्रिया..

- रेडिओं मूलतः एकरेखीय (लीनियर) माध्यम है।

- रेडिओं में शब्द और आवाज ही सब कुछ है।

- टी. वी. भी एकरेखीय है; पर वहाँ शब्दों एवं ध्वनियों की तुलना में दृश्य / तस्वीरों का महत्त्व होता है।

- अखबार की तरह पीछे लोटने, शब्दार्थ देखने की सुविधा नहीं है।

- बुलेटिन प्रसारण में समय का इंतजार करना पड़ता है।

- रेडियों समाचारों में गूढ़ शब्द या वाक्यांश आने पर शब्दकोश को सहारा नहीं ले सकता क्योंकि समाचार आगे निकल जाता है।

- रेडिओं समाचार की सबसे बड़ी चुनौती श्रोताओं को बाँधने की है।

- रेडिओं समाचार उल्टा पिरामिड शैली में होता है।

1. इंट्रो या मुखड़ा:- क्लाइमेक्स खबर की शुरुआत में (खबर का मूल तत्व क्या, कौन, कब, कहाँ का प्रयोग)

उदाहरण - उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले में एक बस दुर्घटना में आज बीस लोगों की मौत हो गई। मृतकों में पाँच महिलाएं और तीन बच्चे शामिल थे।

By Chalia Sir

2. बांडी:- फिर व्याख्या- कैसे? क्यों खबर का घटता हुआ महत्त्वक्रम

3. समापन

रेडिओं समाधार लेखन की बुनियादी बातें:-

- रेडिओं के लिए वाचक / वाचिका के लिए कॉपी तैयार करते हुए कुछ बुनियादी बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

* साफ सुथरी और टाइप्ड कॉपी:- इससे वाचक / वाचिका के रेडिओं समाचार गलत पढ़ने का खतरा नहीं रहता हैं।

- कॉपी के दोनों और पर्याप्त हाशिया छोड़ देना चाहिए।

- एक लाइन मे अधिकतम 12-13 शब्द होने चाहिए ।

- पंक्ति के आखिर में कोई शब्द विभाजित नहीं होना चाहिए।

- पृष्ठ के आखिर में कोई लाइन अधूरी नहीं होनी चाहिए।

- जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्ताक्षर, अंक आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

- एक से दस तक के अंकों को शब्दों में, 11 से 999 तक अंकों में लेकिन 2837550 को अट्ठाइस लाख सैंतीस हजार पाँच सौ पचास लिखा जाना चाहिए ।

- अखबारों में % और $ जैसे संकेत चिह्नों से काम चल जाता है पर रेडिओं में प्रतिशत या डॉलर लिखा जाना चाहिए ।

- वित्तीय संख्याओं को दशमलव की बजाय नजदीकी पूर्णांक में लिखना चाहिए- 47.89 को 48 प्रतिशत ।

- मुद्रास्फीति के आँकड़ो को 9.3 प्रतिशत ही लिखना चाहिए।

- खेल स्कोर को 98 रन बनाए है तो 100 नहीं लिख सकते (98 ही रहेगा)

- आँकड़े तुलनात्मक हो तो बेहतर होगा (8० लाख टन से बढ़कर 86 लाख टन गेहूँ)

- रेडिओं समाचार कभी भी संख्या से शुरू नहीं होता।

★ डेडलाइन, संदर्भ और संक्षिप्ताक्षर का प्रयोग -

- रेडिओं समाचार में डेडलाइन और संदर्भ समाचार में ही गुंथे रहते हैं:- आज, सुबह, आज शाम, आज दोपहर

- रेडिओं समाचार में चर्चित संक्षिप्ताक्षरों का ही प्रयोग होना चाहिए। डब्ल्यू टीओ, यूनिसेफ, एस बी आई बैंक, आईसी आई सी आई बैंक ।

- रेडिओ समाचार में तिथियों को बोलचाल की भाषा में. लिखना चाहिए। जैसे- 26 जनवरी उन्नीस सौ पचास

By Chalia Sir

(3) टेलीविजन विकास व लेखन:-

- यांत्रिक टेलीवीजन का आविष्कार- जे. एल. बेरार्ड ।

- यह श्रव्य दृश्य माध्यम है।

- टेलीविजन देखने और सुनने का माध्यम है।

- इसके समाचार या आलेख (स्क्रिप्ट) लिखते समय इस बात पर खास ध्यान रखने की जरूरत पड़ती है कि आपके शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हो ।

- टेलीविजन समाचार में कम से कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा खबरों की प्रस्तुति होनी चाहिए।

- कैमरे में शॉट्स के आधार पर खबर की बुनावट लिखें।

- दृश्य, शब्द और ध्वनि से जुड़ाव

- टी. वी. में खबरें दो तरह से पेश की जाती है:

(1) बगैर दृश्य के न्यूज रीडर (2) दृश्य से खबर की प्रस्तुति

वॉयस ध्वनि 2 प्रकार की होती है:-

(वॉयस ध्वनि:- यह एक व्यक्ति के स्वरयंत्र में उत्पन्न होने वाली ध्वनि है जिसे मुंह से भाषण या गीत के रूप में उच्चारित किया जाता है)

(1) बाइट (कथन) को खबर बनाने के लिए

(2) प्राकृतिक आवाज (ध्वनि) पक्षियों का चहचहाना, गाड़ी, कारखानों की आवाज। (नेट साउण्ड सी कहते हैं।)

⭐ टी. वी. खबरों के विभिन्न चरण:-

(1) फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज। (2) ड्राई कर

(3) फोन। (4) एंकर - विसुअल

(5) एंकर बाइट (6) लाइव

(7) एंकर - पैकेज

(1) फ्लैश ब्रेकिंग न्यूज:- सबसे पहले कोई बड़ी खबर जो तत्काल दर्शकों तक पहुंचाई जाती हैं - ब्रेकिंग न्यूज

- कम से कम शब्दों में महज सूचना दी जाती हैं।

By Chalia Sir

(2) ड्राई एंकर:- इसमें एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे - सीधे बताता है कि कहाँ, क्या, कब और कैसे हुआ।

- जब तक दृश्य नहीं आते एंकर दर्शकों की रिपोर्टर से मिली जानकारी के आधार पर सूचनाएँ पहुंचाता है।

(3) फोन इन:- इसके बाद खबर का विस्तार होता है और एंकर रिपोर्टर से फोन पर बात कर सुचनाएँ दर्शकों तक पहुँचाता है।

- रिपोर्टर घटना वाली जगह पर मोजूद होता है वहाँ से जितनी जानकारियाँ मिलती है, वह दर्शकों को बताता है।

(4) एंकर विजुअल:- जब घटना के दृश्य मिल जाते हैं तब उन दृश्यों के आधार पर खबरों को एंकर पढ़ता है। इस खबर की शुरुआत प्रारम्भिक सूचना से होती है और बाद में कुछ वाक्यों पर प्राप्त दृश्य दिखाए जाते हैं।

(5) एंकर बाइट :- बाइट (कथन) टी.बी. में बाइट का काफी महत्व होता है

- टी.वी. में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए बाइट को दिखाया जाता है।

- किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही इस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखाकर और खबर सुनाकर प्रामाणिकता प्रदान की जाती है।

(6) लाइव:- किसी खबर का घटना स्थल से सीधा प्रसारण ।

(7) एंकर पैकेज:- किसी खबर को संबंधित घटना के दृश्य, इससे जुड़े लोगों की बाइट (कथन), ग्राफिक के जरिये सूचनाएँ आदि होती है।

⭐ रेडियों और टी.वी समाचार की भाषा शैली:-

(1) वाक्य छोटे, सीधे व स्पष्ट होने चाहिए।

(2) भाषा शैली सम्प्रेषणीय व प्रभावी होनी चाहिए।

(3) भाषा शैली में निम्नलिखित, उपरोक्त, अधोहस्ताक्षरित और क्रमांक का प्रयोग नहीं।

(4) 'द्वारा' शब्द के इस्तेमाल से भी बचना चाहिए "पुलिस के द्वारा चोर को पकड़ा गया।"

[पुलिस ने चोर को पकड़ा]

(5) तथा, एवं, अथवा, व, किन्तु, परन्तु, यथा शब्दों से बचना चाहिए इनकी जगह या, और, लेकिन का प्रयोग करना चाहिए।

(6) विशेषण, सामासिक शब्द, तत्सम शब्द व अतिरंजित उपमाओं से बचना चाहिए।

(7) रेडिओं और टेलीविजन समाचारों में मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग करनी चाहिए।

(8) रेडिओं और टेलिविजन की समाचार शैली में तारतम्यता, सहजता, स्वाभाविकता व बोलचाल के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

जैसे- क्रय-विक्रय की जगह खरीद-बिक्री, स्थानान्तरण की जगह तबादला, पंक्ति की जगह कतार शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

By Chalia Sir

(4) इंटरनेट:- इंटरनेट सिर्फ एक टूल यानी औजार है। (यह एक जाल है)

- सारे माध्यमों का समागम इंटरनेट (जिसकी पहुँच दुनिया के कोने-2, तक)

- यह अंतरक्रियात्मक माध्यम है।

- नकारात्मक पहलू - अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाना

- टेलीप्रिंटर से एक मिनट में 10 शब्द एक जगह से दूसरी जगह भेजे जा सकते थे। पर आज इंटरनेट के माध्यम से एक सैकेण्ड में 56 किलोबाइट यानी लगभग 70 हजार शब्द भेजे जा सकते हैं।

⭐ इंटरनेट पत्रकारिता:- इंटरनेट पर खबरों / अखबरों का आदान-प्रदान इंटरनेट पत्रकारिता है।

⭐ इंटरनेट पत्रकारिता का इतिहास :-

- पहला दौर - 1982 - 1992 इंटरनेट खुद धरातल पर था [इस समय अमेरिका की AOL कम्पनी आई] (अमेरिका ऑनलाइन)

- दूसरा दौर - 1993 - 2001

- तीसरा दौर - 2002 - अब तक

- सच्चे अर्थों में इंटरनेटपत्रकारिता की शुरुआत 1983 - 2002 के बीच हुई।

- इस समय नयी वेब भाषा एच टी एम एल (हाइपर टेक्स्ट मार्कअप लैंगवेज,) आई। इंटरनेट ईमेल, इंटरनेट एक्सप्लोरर और नेट स्केप नाम के ब्राउजर आए - 1983 - 2002 के बीच।

- न्यू मीडिया के नाम पर कौनसी कम्पनियाँ आई - डॉटकॉम

- 1996-2002 के बीच आर्थिक अभाव के कारण किस कम्पनी को बंद करना पड़ा- डॉटकॉम ।

⭐ भारत में इंटरनेट पत्रकारिता:-

- पहला दौर - 1993-2002

- दूसरा दौर 2003 से अब तक।

By Chalia Sir

⭐ इंटरनेट पत्रकारिता:- टाइम्स ऑफ इण्डिया, हिन्दुस्तान टाइम्स, इण्डियन एक्सप्रेस, हिन्दू, ट्रिब्यून, स्टैटस मैन, NDTV, आइ बी एन, जी न्यूज, आजतक और आउटलुक ।

- भूगतान के बाद देखी जाने वाली साइट 'इंडिया टुडे'।

- नियमित अपडेट होने वाली साइटें हिन्दू, टाइम्स ऑफ इण्डिया, NDTV, आउटलुक, इण्डियन एक्सप्रेस, आज तक, जी न्यूज

- सच्चे अर्थों में वेब पत्रकारिता रीडिफ डॉटकॉम, इंडियाइंफोलाइन व सीफी जैसी साइटें।

- भारत की पहली वेबसाइट जो गंभीरता के साथ इंटरनेटपत्रकारिता करती है- रीडिफ डॉटकॉम ।

- वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरु का श्रेय - तहलका डॉटकॉम ।

⭐ हिन्दी नेट संसार:-

- हिन्दी नेट पत्रकारिता की शुरुआत - वेब दुनिया के साथ

- इंदौर की नयी दुनिया समुह से शुरु हुआ यह पोर्टल हिन्दी का सम्पूर्ण पोर्टल है 'वेब दुनिया' ।

- हिन्दी अखबार जो नेट पत्रकारिता / वेब दुनिया पर भी उपलब्ध है - जागरण, नयी दुनिया, हिन्दुस्तान भास्कर, राजस्थान पत्रिका, नवभारत टाइम्स, प्रभात खबर, राष्ट्रीय सहारा

- सिर्फ इन्टरनेट पर ही उपलब्ध अखबार जो प्रिंट रूप में नहीं - 'प्रभासाक्षी'

- इन्टरनेट पत्रकारिता की हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ साइट - BBC (इन्टरनेट के मानदण्डों पर चलने वाली)

- हिन्दी वेब जगत में साहित्यिक पत्रिकाएँ - अनुभूति, अभिव्यक्ति, हिन्दी नेस्ट, सराय

- हिन्दी पत्रकारिता का काल है - अभी तक शैशवकाल

- हिन्दी पत्रकारिता की दो चुनौती - (1) हिन्दी का फौट न होना, इसका हमारे पास की-बोर्ड नहीं है।
(2) बेलगाम फोंट संसार ।

नोट:- माइक्रोसॉफ्ट और वेब दुनिया ने 'यूनिकाड' फौट बनाए हैं।

:- हिन्दी का की-बोर्ड मानकीकरण नहीं है।

By Chalia Sir

अध्याय:- 2

पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

1. पत्रकारीय लेखन क्या है ? -

अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुंचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं उसे पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

⭐ पत्रकार के प्रकार तीन:-

(1) पूर्णकालिक पत्रकार:- किसी समाचार संगठन में काम करने वाला नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है।

(2) अंशकालिक पत्रकार (स्टिंगर):- किसी समाचार संगठन के लिए निश्चित मानदेय पर काम करने वाला।

(3) फ्रीलांसर (स्वतंत्र):- भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखता है।

नोट:- पत्रकारिता जल्दी में लिखा गया साहित्य है जिसका उद्देश्य तात्कालिक और अपने पाठकों की रूचियों और जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाने वाला लेखन।

⭐ ध्यान रखने योग्य बातें:-

(1) छोटे व सरल वाक्य लिखें

(2) भाषा को प्रभावी बनाने के लिए गैर जरूरी विशेषणों जार्गन्स (ऐसी शब्दावली जिससे बहुत कम पाठक परिचित होते हैं)

2. समाचार कैसे लिखा जाता है ?

- उल्टा पिरामिड शैली में (इंवरेंड पिरामिड शैली)

(1) सबसे ऊपर महत्त्वपूर्ण सूचना (क्लाइमैक्स)

(2) उसके बाद कम महत्वपूर्ण सूचना

(3) समापन

By Chalia Sir

3. समाचार लेखन में छः ककार:- क्या, कौन, कब, कहां, कैसे, क्यों।

1. इंट्रो / मुखड़ा:- क्या, कौन, कब, कहाँ

2. बॉडी:- कैसे, क्यों, बॉडी में

3. समापन

3. फीचर क्या है ?

- फीचर का शाब्दिक अर्थ:- चेहरा-मोहरा

अभिप्राय - एक सुव्यवस्थित, सर्जनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना व मनोरंजन करना होता है, उसे फीचर कहा जाता है।

"फीचर एक गद्यगीत है, जो लंबा, नीरस और गंभीर नहीं हो सकता।" - डॉ. पुरुषोत्तमदास टंडन

अर्थात् - फीचर किसी सच्ची घटना के तथ्यों का मनोरंजक लेख है।

⭐ फीचर की विशेषताएँ :

- फीचर सूचनाधारित उद्देश्यपूर्ण रचना है। यह सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।

- फीचर का उद्देश्य मनोरंजन के साथ पाठकों को सूचना देना, उन्हें शिक्षित करना है।

- फीचर किसी व्यक्ति, घटना विषय इत्यादि का सही-सही, स्पष्ट मनोरंजक शैली में किया गया वर्णन है जो कि लेखक के अनुभव पर आधारित होता है।

- फीचर लेखन में तथ्य और मनोरंजन का मेल होता है, अत: लेखक के पास अपनी भावनाएँ, राय या दृष्टिकोण जाहिर करने का पर्याप्त अवसर होता है।

- आकर्षक, कलात्मक व रोचक शोलों में होता है।

- उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग प्रयोग नहीं।

- शैली सजीव, चित्रात्मक और काफी हद तक कथात्मक और मन को छूने वाली।

- फीचर लेखन में शब्द सीमा का कोई नियम नहीं ।

- फीचर की शब्द सीमा - 250 से 3००० शब्द।

- फीचर लेखन का कोई निश्चित ढांचा या फार्मूला नहीं होता।

- फीचर का प्रारंभ आकर्षक होना चाहिए, प्रभावी, मध्य भाग में दिलचस्प और अंनूठी घटना का वर्णन, पिक्चर के आखिरी हिस्से में भविष्य की योजनाओं पर फोकस करना चाहिए।

By Chalia Sir

- एक अच्छे और रोचक पिक्चर के साथ फोटो, रेखांकन, ग्राफिक्स होना जरूरी होता है।

⭐ समाचार और फीचर लेखन में अंतर

- समाचार का उद्देश्य खबर प्रसारित करना होता है जबकि संप्रेषण के साथ सूचना देना फीचर का प्रयोजन है।

- फीचर द्वारा समाचार के समान तत्कालीन घटना का ब्यौरा नहीं दिया जाता है।

- समाचार लेखन के विपरीत फीचर लेखन में उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता है।

- समाचार की भाषा स्पष्ट, तथ्यात्मक और प्रचलित शब्दावली से युक्त होती है। जबकि फीचर की भाषा रुपात्मक, कलात्मक और आकर्षक होती है।

- फीचर में समाचारों के समान अधिकतम शब्द सीमा अंकुश नहीं होता है।

- फीचर आमतौर पर समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं।

- समाचार में रिपोर्टर अपने विचार नहीं डाल सकता जबकि फीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है।

⭐ फीचर लेखन के तत्व :-

(i) तथ्यों का संग्रह:- जिस विषय या घटना का फीचर लिखा जाता है उससे जुड़े तथ्यों/जानकारी प्राप्त करना।

(ii) फ़ीचर का उद्देश्य:- उद्देश्य निश्चित हो ।

(iii) प्रस्तुतीकरण:- मनोरंजक, कलात्मक, कथात्मक, सरस - सरल।

(iv) शीर्षक तथा आमुख:- 'जिज्ञासा पैदा करने वाला'

"क्रिकेट के भगवान : सचिन तेंदुलकर "

(v) साज-सज्जा:- चित्र, रेखाचित्र, ग्राफिक्स

⭐ फ़ीचर के प्रकार :-

(1) समाचार बैकग्राउंडर। (2) यात्रा फीचर

(3) मानवीय रुचिपरक। (4) जीवन शैली फीचर

(5) खोजपरक फ़ीचर। (6) खेलकूद

(7) विज्ञान। (8) पर्वोत्सवी

By Chalia Sir

(9) व्याख्यात्मक।　　　　　(10) ऐतिहासिक

(11) फोटो फीचर।　　　　　(12) रूपात्मक फ़ीचर

(13) साहित्यिक फीचर।

4. प्रतिवेदन रिपोर्ट: -

अखबारों और पत्रिकाओं में सामान्य समाचारों के अलावा गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर विशेष रिपोर्ट भी प्रकाशित होती है।

- ऐसी रिपोर्टों को तैयार करने के लिए किसी घटना या, समस्या मुद्दे की गहरी छानबीन की जाती है।

- महत्त्वपूर्ण तथ्यों को इकट्ठा किया जाता है।

- फिर तथ्यों के विश्लेषण के ज़रिये, नवीते, प्रभाव और कारणों को स्पष्ट किया जाता है।

⭐ विशेष रिपोर्ट के प्रकार :-

(i) खोजी रिपोर्ट (इंवेस्टिगेटिव रिपोर्ट):- अनियमितताओं, भ्रष्टाचार, गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए। (मौलिक शोध)

(ii) इन डेप्थ परपोर्ट:- सार्वजनिक तौर पर उपलक्ष्य तथ्यों, सूचनावों और आँकड़ो की गहरी छानबीन की जाती है और उसके आधार पर किसी घटना या समस्या के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करना।

(iii) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट:- इन डेप्थ रिपोर्ट को विश्लेषण और व्याख्य के आधार पर प्रस्तुत करना।

(iv) विवरणात्मक रिपोर्ट:- किसी घटना / समस्या का संपूर्ण, विस्तृत, बारीक विवरण ।

नोट:- रिपोर्टों को समाचार की उल्टा पिरामिड शैली में लिखा जाता है।

- अन्य पुरुष शैली में।

- रिपोर्ट- दो घण्टे की बैठक, किसी संस्था के आय-व्यय का मासिक प्रतिवेदन, शैक्षिक या सामाजिक संस्था का त्रैमासिक प्रतिवेदन भी लिखा जा सकता है।

5. विचारपरक लेखन-लेख, टिप्पणीयाँ और संपादकीय :-

- कुछ अखबारों में संपादकीय पृष्ठ के सामने ऑप-एड पृष्ठ पर भी विचारपरक लेख, टिप्पणीयाँ और स्तंभ प्रकाशित होते हैं।

(क) संपादकीय लेखन:- अखबार की आवाज माना जाता है।

By Chalia Sir

- संपादकीय के जरिए अखबार किसी घटना समस्या या मुद्दों की प्रति अपनी राय प्रकट करते हैं।

नोटः- संपादकीय आमतौर पर अखबारों में सहायक संपादक संपादकीय लिखते हैं।

- कोई बाहर का लेखक या पत्रकार संपादकीय नहीं लिख सकता।

- हिंदी के अखबारों में कुछ में तीन, कुछ में दो और कुछ में केवल एक संपादकीय प्रकाशित होता है।

(ख) स्तंभ लेखन:- (कॉलम) - विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप है।

- लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें नियमित स्तम्भ लिखने का आमंत्रण देते हैं।

- स्तम्भ का विषय लेखक के मन मुताबिक होता है।

- स्तम्भ लेखक के नाम से जाने जाते हैं।

- कई अखबारों की पहचान स्तम्भ से होती है।

- नये लेखकों को स्तम्भ लेखन का अवसर नहीं मिलता।

(ग) संपादक के नाम पत्र:- यह पाठकों का स्तम्भ होता है।

- इसमें पाठक विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं।

- संपादन के नाम पत्र में पाठकों द्वारा जन समस्याएँ उठाई जाती है।

- यह जनमत का प्रतिबिम्ब माना जाता है।

- संपादन के नाम पत्र लिखने से नए लेखकों को अच्छा अवसर / मौका (प्लेटफॉर्म) मिलता है।

(घ) लेख - सभी अखबार संपादकीय पृष्ठ पर समसामयिक मुद्दों पर वरिष्ठ पत्रकारों और उन विषयों के विशेषज्ञों के लेखक प्रकाशित करते हैं।

- रिपोर्ट और फीचर में लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है पर लेख में तथ्यों और सूचनाओं पर आधारित होते हैं।

- लेख की कोई निश्चित शैली नहीं होती ।

- लेख उसी पर लिखना चाहिए जिस पर आपकी अच्छी पकड़ हो ।

- लेख की शुरुआत में अगर उसे विषय के सबसे ताजा प्रसंग या घटनाक्रम का विवरण दिया जाए और फिर उससे जुड़े अन्य पहलुओं को सामने लाया जाए, तो लेख का प्रारंभ आवश्यक बन जा सकता है।

By Chalia Sir

(ङ) साक्षात्कार / इंटरव्यू -

- एक सफल साक्षात्कार के लिए आपके पास न सिर्फ ज्ञान होना चाहिए बल्कि आपमें, कूटनीति धैर्य और साहस जैसे गुण होने चाहिए।

- साक्षात्कार दो प्रकार से लिख सकते हैं- सवाल और जवाब के रूप में या आलेख की तरह।

- समाचार माध्यमों में साक्षात्कार का बहुत महत्व है।

- साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी अन्य व्यक्ति से तथ्य उसकी राय और भावनाएं जानने के लिए सवाल पूछता है।

- एक अच्छे और सफल साक्षात्कार के लिए यह जरूरी है कि आप जिस विषय पर और जिस व्यक्ति के साथ साक्षात्कार करने जा रहे हैं उसके बारे में आपके पास पर्याप्त जानकारी हो।

By Chalia Sir

अध्याय:- 3

विशेष लेखन - स्वरूप और प्रकार

👉 विशेष लेखन से अभिप्राय:-

विशेष लेखन में सामान्य विषय से हटकर विषय विशेष पर लेखन किया जाता है, विशेष लेखन कहलाता है।

जैसे- खेल जगत्, कृषि जगत्, कानून क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्र, रक्षा- पर्यावरण, शिक्षा आदि।

- अर्थात् अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ होना जरूरी है।

- समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के अलावा टी. वी., रेडिओं चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग से डेस्क होता है।

- उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है।

- संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है, मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।

- यदि आपकी दिलचस्पी और जानकारी का क्षेत्र खेल है तो खेल बीट (पर्यावरण बीट, आर्थिक बीट आदि..........)

नोट:- सामान्य बीट रिपोर्टिंग के लिए भी एक पत्रकार को काफ़ी तैयारी करनी पड़ती है।

जैसे:- राजनीतिक पार्टी बीट का इतिहास क्या है? उसमें क्या हुआ है? आज क्या चल रहा है, पार्टी के सिद्धान्त या नीतियाँ क्या है? उसके पदाधिकारी कौन-कौन है? आदि।

👉 रिपोर्ट के प्रकार - 2

(1) बीट रिपोर्टिंग,

(2) विशेषीकृत रिपोर्टिंग

👉 दोनों में अन्तर

(1) बीट रिपोर्टिंग:- इस रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और दिलचस्पी होना पर्याप्त है, 'बीट से संबंधित सामान्य खबरें लिखनी होती है।

(2) विशेषीकृत रिपोर्टिंग:- विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओ, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करें और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश करें।

उदाहरण:- अगर शेयर बाजार में भारी गिरावट आती है तो उस बीट पर रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता उसकी एक तथ्यात्मक रिपोर्ट तैयार करेगा जिसमें सभी जरूरी सूचनाएँ और तथ्य शामिल होंगें लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता इसका विश्लेषण करके यह स्पष्ट करने की कोशिश करेगा कि बाजार में गिरावट क्यों और किन कारणों से आई है और इसका आम निवेशकों पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

By Chalia Sir

- बीट कवर करने वाले रिपोर्टर - संवाददाता

- विशेषीकृत रिपोरिंग करने वाले रिपोर्टर - विशेष संवाददाता

- विशेष लेखन में शामिल होता है - रिपोर्टिंग, फीचर, टिप्पणी, लेख, साक्षात्कार, समीक्षा और स्तंभ लेखन भी आता है।

(मुद्दे जिनको प्राथमिकता दी जाती है- रक्षा, विदेश नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा और विधि जैसे क्षेत्रों में विशेषीकृत रिपोर्टिंग को प्राथमिकता दी जाती है।)

👉 कैसे हासिल करें विशेषज्ञता ?

- आजकल पत्रकारिता में "जैक ऑफ ऑल ट्रेडस, बट मास्टर ऑफ वन (सभी विषयों के जानकार लेकिन किसी खास विषय में विशेषज्ञता नहीं) की बजाए "मास्टर ऑफ वन" (यानी किसी एक विषय में विशेषज्ञता) की मांग की जा रही है।

- उच्चत्तर माध्यमिक (+2) और स्नातक स्तर पर उसी विषय से जुड़ी पढाई करें।

⭐ अन्य शब्दावली :-

- बीट लेखन:- रिपोर्टिंग का विशेष लेखन- राजनीति, साहित्य, विज्ञान

- न्यूजपेज:- किसी मुददे पर फीचर या रिपोर्ट लिखते समय उसमें ताजा या तत्कालीन घटना का उल्लेख करना ।

- ऑप-एड-पृष्ठ:- संपादकीय पृष्ठ के सामने प्रकाशित होने वाला पृष्ठ जिसमें विश्लेषण, स्तम्भ फीचर, साक्षात्कार और विचारपूर्ण टिप्पणीयाँ प्रकाशित की जाती है।

- इन - डेप्थ - रिपोर्ट:- (गहरी रिपोर्ट) - सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकडो की गहरी छानबीन की जाती है।

- स्टोरी:- मीडिया की दुनिया में खबर को स्टोरी कहते हैं।

- कवर स्टोरी:- प्रथम पेज पर।

- हार्ड न्यूज:- अपराध/ दुर्घटना से जुड़ी ।

- सॉफ्ट न्यूज:- मानवीय संवेदनाओं को स्पर्श करने वाली खबरें ।

- बाइट:- 20-30 सैकेण्ड के समाचार, टी. वी. समाचार ।

- पैकेज फॉरमेट:- समाचार प्रस्तुति के सभी चरणों को मिलाकर प्रस्तुत करना ।

- पत्रकार की चार वैशाखियाँ:- सच्चाई, संतुलन, निष्पक्षता, स्पष्टता ।

By Chalia Sir

अध्याय:- 4

कैसे बनती हैं कविता

"कविता कोने में घात लगाए बैठी है, यह हमारे जीवन में किसी भी क्षण बसंत की तरह आ सकती है।" - जॉर्ज लुइस बोर्खो

(अर्जेन्टीना के स्पेनिश लेखक)

👉 कविता क्या है?...

"आरम्भ में शब्दों से खेलना सीखे (प्ले विद द वर्ड्स)- W. H. आर्डेन

👉 कविता के तत्व -

(1) संवेदना:- वाचिक परम्परा के रूप में जन्मी कविता आज लिखित रूप में मौजूद है जिसके मूल में संवेदना है, राग है। इसी संवेदना ने रत्नाकर डाकू को वाल्मीकि बना दिया।

सुमित्रानंदन पन्त:- वियोगी होगा पहला कवि

आह से उपजा होगा गान ।

उमड़ कर आंखों से चुपचाप

बही होगी कविता अनजान ।

(2) शब्द विन्यास:- कविता की अनजनी दुनिया का सबसे पहला उपकरण - शब्द

- शब्दों से मिलजोल कविता की पहली शर्त है।

- प्ले विद द वर्ड्स - W.H. आर्डेन

- तुकबंदी धीरे-धीरे रचनात्मक रूप लेने लगती है।

जैसे - "अक्कड - बक्कड़ बम्बे बो, अस्सी नब्बे पूरे सौ।"

- अगर कहीं मैं तोता होता

तोता होता तो क्या होता?

तोता होता - रघुवीर ससय

By Chalia Sir

- वाह जी वाह !

हमको बुद्धु ही निरा समझा है।

हम समझते ही नहीं जैसे कि आपको बीमारी है - शमशेर बहादुर सिंह

(3) लय / व्यवस्था:- शब्दों के खेल से शुरू हुई कविता अब लय में बदल जाती है।

(लय)

- चोट जब पैसे पर पत्ती है तो कहीं न कहीं एक चोर कील दबी रह जाती है जो मौका पाकर उभर जाती है।	- पड़ती है जब पैसे पर चोट तो चोर कील कहीं न कहीं एक रह जाती है दबी । - धूमिल (मोतीराम)

(4) विम्ब और छन्द (आंतरिक लय):- ये तत्व कविता को इन्द्रियों से पकड़ने में सहायक होते हैं।

- बाह्य संवेदनाएँ मन के स्तर पर बिम्ब के रूप में बदल जाती है।

- कुछ शब्दों को सुनकर अनायासः मन के भीतर कुछ चित्र कौंध जाते हैं।

- ये स्मृति चित्र शब्दों के सहारे कविता का बिम्ब निर्मित करते हैं।

जैसे:- "तट पर बगुलों सी वृद्धाएं

विधवाएँ जप-ध्यान में मगन

मंथर धारा में बहता

जिनका अदृश्य गति अंतर-रोदन । - सुमित्रानंदन पंत

- कविता पाँच ज्ञानेन्द्रियों (स्पर्श, स्वाद, घ्राण, दृश्य, श्रवण) रूपी अंगुलियों से पकड़ी जाती है।

"बीती विभावरी जाग री

अम्बर पनघट में डुबो रही, तारा घट उषा नागरी।"

नोटः - छन्द (आंतरिक लय) कविता का अनिवार्य तत्व है।

- मुक्त छन्द की कविता लिखने के लिए भी लय का निर्वाह जरूरी है।

By Chalia Sir

- नागार्जुन की - "बादल को घिरते देखा," कविता

"अकाल और उसके बाद "

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की सही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त ।

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखे कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखे कई दिनों के बाद ।

👉 कविता की भाव संपदा:

(1) वैयक्तिक सोच (2) कवि की दूरदर्शिता (3) सामाजिकता

नोटः - कवि की वैयक्तिक सोच, दृष्टि और दुनिया को देखने का नजरिया कविता की भाव संपदा बनती है, कवि की इस वैयक्तिकता में सामाजिकता मिली होती है।

- निराला की 'सरोज स्मृति '

- भाषा के साथ कवि का यह बरताव ही कविता कहलाती है।

- कविता लिखने की जन्मजात शक्ति जिसे दुनिया में 'प्रतिभा' कहा जाता है, जो एक आंतरिक अमता है।

👉 कविता के प्रमुख तत्त्व:- (घटक) -

1. कविता लेखन की कोई निश्चित प्रणाली नहीं।

2. भाषा का सम्यक ज्ञान जरूरी ।

3. शब्द विन्यास जिससे वाक्य निर्माण होता है।

4. वाक्य गठन की विशिष्ट प्रणाली होती है उसे शैली कहा जाता है, अतः काव्य शैलियों का ज्ञान जरूरी

By Chalia Sir

5. निम्नलिखित चिह्नों का प्रयोग (!, ----, _, ।, ।।,)

6. कविता छंदबद्ध व छंदमुक्त दोनों हो सकती है।

7. कविता समय विशेष की उपज होती है। (समय के अनुसार कविता का स्वरूप बदल जाता है।

8. कविता को रचने के लिए चीजों को देखने की नवीन दृष्टि या नए को पहचानने और प्रस्तुत करने की कला न हो तो काव्य लेखन संभव नहीं भारतीय विचारकों ने इसे प्रतिभा कहा है।

9. रचनात्मक / सर्जनात्मक शक्ति भी एक महत्वपूर्ण घटक हैं।

→"कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।"- पंतजी (पल्लव की भूमिका)

→" मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है।"- निराला

→ " कविता कल्पना की रानी है।"- निराला

→ "कविता यों ही बन जाती है बिन बनाए; क्योंकि रूह में तड़प रही है याद तुम्हारी।"- केदारनाथ अग्रवाल

By Chalia Sir

अध्याय:- 5

नाटक लिखने का व्याकरण

"नाटक का तंत्र लेखक को खुद निश्चित करना पड़ता है। नाटक का माध्यम खून में उतर जाना चाहिए, संज्ञा पर उसकी छाप उठनी चाहिए तभी कोई लेखक अच्छा नाटक लिख सकता है।" - विजय तेंदुलकर (मराठी नाटककार)

- नाटक को दृश्य काव्य की संज्ञा दी जाती है।

- जहाँ साहित्य की अन्य विधाएँ अपने लिखित रूप में ही निश्चित और अंतिम रूप को प्राप्त कर लेती है, वहीं एक नाटक अपने लिखित रूप में सिर्फ एक आयामी ही होता है।

- जब नाटक का मंचन हमारे सामने आता है तब जाकर उसमें संपूर्णता आती हैं।

- नाटक पढ़ने, सुनने के साथ देखने के तत्व समेटे हुए है।

👉 नारक की प्रमुख विशेषताएँ (अंग):-

1. समय का बंधन:- नाटक निश्चित समय में पूरा लेना चाहिए ।

- नाटक अपनी रचना को भूतकाल से उठाए या भविष्य से दोनों स्थितियों में नाटक को वर्तमान काल में संयोजित करना होता है।

- नाटक का रंगमंच काल वर्तमान काल ही होता है।

- साहित्य की दूसरी विधाओं कहानी, उपन्यास, या फिर कविता को हम कभी भी पढ़ते हुए या सुनते हुए बीच में रोक सकते हैं और कुछ समय बाद वहीं से शुरू कर सकते हैं पर नाटक के साथ ऐसा संभव नहीं है।

- नाटक में तीन अंक होते हैं, भरतमुनि लिखित नाट्यशास्त्र के अनुसार प्रत्येक अंक की अवधि कम से कम 48 मिनट की हो।

2. शब्द:- कविता और नाटक के लिए शब्द का विशेष महत्त्व होता है।

- नाट्यशास्त्र में वाचिक अर्थात बोले जाने वाले शब्द को नाटक का शरीर कहा गया है।

- कविता शब्द, बिम्ब और प्रतीक में बदलने की क्षमता रखते हैं अतः कविता ही नाटक के सबसे ज्यादा निकट है।

👉 भाषा का स्वरूप - अधिक से अधिक संक्षिप्त और सांकेतिक भाषा का प्रयोग करें।

- भाषा अपने आप में वर्णित न होकर क्रियात्मक अधिक हो ।

- उन शब्दों में दृश्य बनाने की क्षमता हो।

By Chalia Sir

- शाब्दिक अर्थ से ज्यादा व्यंजना की ओर ले जाएं।

3. कथ्य/कथानक:- नाटक को पहले कहानी के रूप में पिरोना

- नाटककार को रचनाकार के साथ-साथ कुशल संपादक भी होना चाहिए।

- पहले घटनाओं, स्थितियों अथवा दृश्यों का चुनाव, फिर उन्हें किस क्रम में रखा जाए कि वे शून्य से शिखर की ओर बढ़ें।

4. संवाद:- नाटक का सबसे जरूरी और सशक्त माध्यम (सबटैक्सट) कहा जाता है।

(कथोपकचन)

- नाटक के तत्वों को उभारने के लिए विरोधी विचार धाराओं का संवाद आवश्यक।

- नाटक को कमजोर या सशक्त बनाने में अहम भूमिका - संवादों की होती है।

- संवाद वर्णित न होकर क्रियात्मक एवं दृश्यात्मक

- रंगमंच प्रतिरोध का सबसे सशक्त माध्यम - संवाद है।

- नाटक में स्वीकार व अस्वीकार की स्थिति हमेशा बनी रहे।

- जिस नाटक में असंतुष्टि, छटपटाहट, प्रतिरोध और अस्वीकार जैसे नकारात्मक तथ्यों की जितनी ज्यादा उपस्थिति होगी वह उतना ही गहरा और सशक्त नाटक साबित होगा।

- नाटक में हमेशा खलनायक की भूमिका अहम होती है।

- संवाद जीवंत, सहज और स्वाभाविक हो।

- नाटक स्वयं में एक जीवंत माध्यम है।

- संवाद तत्सम और क्लिष्ट भाषा में क्यों न लिखे गये हों, स्थिति तथा परिवेश की मांग के अनुसार यदि वे स्वाभाविक जान पड़ते हैं।

5. शिल्प:- वर्तमान में शिल्प की दृष्टि से मौजूद विकल्प.........

- शास्त्रीय नाटक जैसे अभिज्ञानशांकुतलम् स्वप्नवासवदता, मृच्छकटिनम् , उत्तररामचरित, पारसीनाटक, यथार्थवादी नाटक, नुक्कड़ नाटक आदि है।

👉 नाटक के तत्त्व:-

(1) कथावस्तु। (2) पात्र या चारित्र चित्रण

(3) देशकाल या परिवेश। (4) संवाद (हन्दी नाटक का विकास)

(5) भाषा शैली। (6) अभिनेयता (पाश्चात्य तत्व)

(7) उद्देश्य

By Chalia Sir

अध्याय:- 6

कैसे लिखें कहानी

👉 कहानी किसी एक की नहीं, वह कहने वालों की भी। इसकी, उसकी, सबकी; सृष्टि समूचे परिवार की। नानी की मुहर इस पर है। इस लोक की प्रजा होने के कारण हर किसी की कहानी लिखी और सुनी जा सकती है। - कृष्णा सोबती

👉 परिभाषा:- किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबद्ध ब्योरा जिसमें परिवेश न हो, द्वन्द्वात्मकता हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम उत्कर्ष का बिन्दु हो, उसे कहानी कहा जाता है।

- कहानी का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव इतिहास
- कहानी, मानव स्वभाव और प्रकृति का हिस्सा है।
- मूलतः कहानी की परम्परा मौखिक या वाचिक रही है।

👉 कहानी के तत्व :- (1) कथानक (2) पात्र या चरित्र चित्रण

(3) संवाद या कथोपकथन (4) देशकाल (5) भाषा-शैली

(6) उद्देश्य

(1) कचानक:- कहानी का वह संक्षिप्त रूप जिसमें प्रारम्भ से अंत तक कहानी की सभी घटनाओ और पात्रों का उल्लेख किया जाता है।

- कथानक 10 - 12 पंक्तियों में लिखा जा सकता है।
- कथानक कहानी का प्रारम्भिक नक्सा होता है।
- कथानक कटानीकार के मन में किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना के कारण आता है।
- कथानक के तीन भाग बताए गए है- प्रारम्भ, मध्य और अन्त
- द्वंद्व कथानक को आगे बढ़ाता है। द्वंद्व से अभिप्राय है कि परिस्थितियों में इस काम के रास्ते में यह बाधा।
- कहानी का कथानक परिवेश पर आधारित यधार्थवादी और लोकप्रिय भी हो सकता है।

By Chalia Sir

(2) पात्रों का चरित्र चित्रण:- पात्रों के चरित्र चित्रण का सबसे सरल तरीका उनके क्रिया-कलापों, संवादो तथा दूसरे लोगों द्वारा बोले गए संवादो के माध्यम से प्रभावशाली होता है।

- कहानी का पात्र यथार्थवादी और यथार्थवादी आदर्शोन्मुख भी हो सकते है।

- कहानी के पात्रों का चरित्र-चित्रण मनोवैज्ञानिक ढंग से होना चाहिए।

(3) कथोपकथन / संवाद:- संवाद ही कहानी को, पात्र को स्थापित, विकसित करते हैं, और कहानी को गति प्रदान करते हैं।

- कहानी के संवाद गतिशील और संक्षिप्त होने चाहिए।

- संवादों में एक प्रमुख गुण नाटकीयता एवं मनोरंजक होने चाहिए।

- कहानी के संवादों में सुतूहल का होना आवश्यक है।

(4) देशकाल, स्थान और परिवश:- कहानी में प्रयोग की गई विषय-वस्तु के आस-पास का परिवेश ।

- कहानी में घटना, स्थान, पात्र, पत्रों की वेशभूषा इत्यादि देश और काल के अनुसार ही की जाती है।

(5) भाषा शैली:- कहने का अंदाज, कहानी की भाषा शैली स्वाभाविक बोलचाल की होनी चाहिए, बनावटी नहीं।

(6) उद्देश्य:- मनोरंजन, शिक्षा एवं ज्ञान का संदेश ।

👉 नोटः- आधुनिक कहानी के जन्मवाता - चेखब (रुस के साहित्यकार)

- आधुनिक हिन्दी कहानी के जन्मदाता - प्रेमचन्द

- भीष्म साहनी की पहली कहानी - 'नीली आँखे'- 'हंस' पत्रिका में प्रकाशित

- उस समय हंस पत्रिका का संपादक - अमृतराय

By Challa Sir

अध्याय:- 7

वार्ता

- दो व्यक्ति आपस में बातचीत कर रहे हैं अर्थात् बातचीत या विषय का बोध कराने वाला कथन ।
- वार्ता करने वाला - ' वार्ताकार'
- वार्ता अर्थात् किसी विषय पर अपने विचारों को व्याकरणिक शुद्धता के साथ सुसंबंध एवं तार्किक रूप से अभिव्यक्त करना ।
- वार्ताकार वार्ता का प्रारम्भ आकृष्ट ढंग से करें ।
- वार्ता वही श्रेष्ठ है जो अपनी ज़मीनी सच्चाई से जुड़ी हो।
- यह ध्यान रखना जरूरी है कि वार्ताकार अपने मूल विषय से भटक न जाए।
- वार्ताकार को विषय वस्तु की ठोस जानकारी होनी चाहिए, तत्कालीन समाज, राजनीति एवं आर्थिक, धार्मिक पहलुओं पर भी स्पष्ट जानकारी।
- आजकल टेलीविजन, इंटरनेट से वार्ता को प्रत्यक्ष देख एवं सुन सकते हैं।

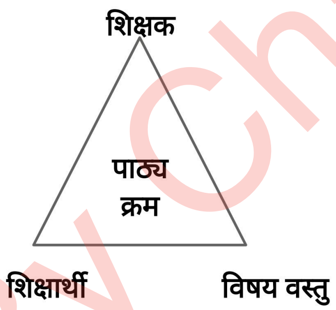

👉 उद्देश्य:- बालक का सर्वागीण विकास करना।

- आत्मविश्वास जागृत करना
- संकोच व झिझक दूर करना
- भाषा उच्चारण शुद्ध होगा
- नवीन शब्दावली में शुद्धि
- अभिव्यक्ति का विकास
- अधिगम स्तर में वृद्धि

By Chalia Sir

नोट:- वार्ता साहित्य की शुरुआत - भारतेंदु युग से हुई।

- वार्ता के पक्ष - (1) वक्ता

  (2)श्रोता

- भारतेंदु हरिश्चंद्र से वार्ता पंडित राधाचरण गोस्वामी ने की थी

- छिताई वार्ता - नारायण दास

- 84 वैष्णवन की वार्ता - गोकुलनाथ

- 252 वैष्णवन की वार्ता - गोकुलनाथ

अध्याय:- 8

कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण

- साहित्य की अलग-अलग विधाओं का अलग-अलग स्वरूप होता है।

- रचना प्रक्रिया, तत्व भी अलग-अलग होते हैं।

- भाषा का प्रयोग भी विधा बदले जाने पर परिवर्तित हो जाता है।

नोट:- कहानी का नाटक में रूपान्तरण करने के लिए सबसे पहले कहानी और नाटक में वैविध्य तथा समानताओं को समझना आवश्यक है।

👉 कहानी और नाटक में समानता:-

(1) कहानी और नाटक दोनों में एक कहानी होती है।

(2) पात्र होते है।

(3) संवाद

(4) द्वन्द्व

By Chalia Sir

(5) चरम उत्कर्ष (क्लाइमेक्स)

(6) देशकाल, वातावरण, परिवेश

(7) दोनों का क्रमिक विकास होता है।

👉 कहानी और नाटक में अन्तर:-

(1) कहानी कही जाती है या पढ़ी जाती हैं, नाकट मंच पर प्रस्तुत किया जाता है।

(2) कहानी में अभिनेता या अभिनय नहीं, नाटक में अभिनेता या अभिनय की जरूरत पड़ती है।

(3) कहानी का संबंध लेखक और पाठक से होता है वही नाटक लेखक, निर्देशक, पात्र, दर्शक, श्रोता एवं अन्य लोगों को एक - दूसरे से जोड़ता है।

(4) कहानी में केवल कथ्य, पर नाटक में कथ्य के साथ दृश्य भी होता है, जिसका स्मृति पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

👉 कैसे करें कहानी का नाट्य रुपान्तरण:-

(1) दृश्य निर्माण:- कहानी की विस्तृत कथावस्तु / कथानक को सामने रखते हुए एक-एक घटना को चुन-चुनकर निकाला जाता है, और उसके आधार पर दृश्य का निर्माण करना (एक दृश्य गाँव के बच्चे का मेले के लिए तैयार होने का, एक हामिद का, एक मेले का - ईदगाह)

- प्रत्येक दृश्य एक लघु नाटक, जिन्हें व्यवस्थित करके नाटक का निर्माण।

(2) संवाद लेखन:- कहानी के संवादों को इकट्ठा कर लेना चाहिए यदि कहानी में वे संवाद कम है तो संवादों का निर्माण कर लेना चाहिए।

- नये संवाद, कहानी के संवादों से मेन खाना चाहिए।

- कहानी की अपेक्षा नाटक के संवाद छोटे हों।

(3) परिवेश वर्णन संबंधी टिप्पणीयों का समायोजन:- विवरणात्मक टिप्पणी यदि परिवेश के बारे में है तो उसे मंच सज्जा या पार्श्व संगीत के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया जाए। इसके लिए नाटक पर्याप्त दृश्य संकेत देने चाहिए।

(4) चरित्र-चित्रण:- कहानी में वर्णित पात्रों को चरित्र के अनुरूप मंच पर प्रस्तुत करने के लिए उचित वेश - सज्जा (कस्टयूम),

By Chalia Sir

रूप सज्जा (मेकप) आदि का उपयोग होता है जो प्राय: निर्देशक के हिस्से का काम है पर नाटक - लेखक भी आवश्यक संकेत दे सकता है।

- संवादों में पात्रानुकूल भाषा या शब्दावली का प्रयोग करके भी चरित्र - चित्रण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

(5) मानसिक द्वन्द्व:- वह ध्वनि जो दर्शकों को सुनाई देती है पर पात्र नहीं बोलता है जिसको 'वायस ओवर' कहा जाता है।

- कुछ अन्य प्रसिद्ध कहानियाँ जिनका सफलतापूर्वक नाट्य रूपान्तरण हुआ है:-

- चीफ की दावत - भीष्म साहनी

- टोबा टेक सिंह - मंटो

- डिप्टी कलेक्टरी - अमरकांत

- दुविधा - विजयदान देथा

- कफ़न - प्रेमचन्द

- बड़े भाई साहब - प्रेमचन्द

- मोटेराम शास्त्री - प्रेमचन्द

- ईदगाह - प्रेमचन्द

- रुपया तुम्हें खा गया - भगवती चरण वर्मा

- वारेन हेस्टिंग्स का साँड - उदय प्रकाश

- और अंत में प्रार्थना - उदय प्रकाश

- मोहनदास - उदय प्रकाश

- धूप का टुकड़ा - निर्मल वर्मा

- डेढ़ इंच ऊपर - निर्मल वर्मा

- वीक एंड - निर्मल वर्मा

(तीन एकांत नाम से प्रकाशित)

By Chalia Sir

अध्याय:- 9

कैसे बनता है रेडियो नाटक

- नाट्य आन्दोलन के विकास में अहम भूमिका - रेडियो नाटक

- मूलतः रेडियों के लिए लिखे गये नाटक - रेडिओ नाटक

धर्मवीर भारती कृत - अंधायुग

मोहन राकेश कृत - आषाढ़ का एक दिन - प्रसिद्ध रेडिओं नाटक

- रेडियो नाटक और नाटक में समानता:- कथानक, पात्र, संवाद, कथाक्रम का विकास, द्वन्द्व, चरमोत्कर्ष।

नोटः- सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडिओं नाटक में भी चरित्र होते हैं उन चरित्रों के आपसी संवाद होते हैं और इन्हीं संवादों के जरिये आगे बढ़ती है कहानी.......

👉 रेडिओं नाटक की विशेषताएँ :-

(1) सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो एक दृश्य माध्यम नहीं है, श्रव्य माध्यम है, अतः रेडिओ नाटक में दृश्यों की गुंजाइस नहीं होती है।

(2) रेडिओं नाटक की प्रस्तुति पूरी तरह से संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से होती है।

(3) सिनेमा और नाटक की तरह रेडियो नाटक में 'एक्शन' की गुंजाइश नहीं होती है।

(4) रेडिओ नाटक की अवधि सीमित (15 से 30 मिनट) होती है इसी कारण पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए।

(5) केवल आवाजों के सहारे अधिक पात्रों को याद रखना मुश्किल है।

(6) परिवेश पात्र और उसके चरित्र संबंधि विविध जानकारी भी संवादों और ध्वनि संकेतों के माध्यम से ही दी जाती है। इसमें मंच सज्जा / वस्त्र सज्जा की सुविधा नहीं होती।

👉 रेडिओं नाटक के लिए कहानी चुनाव :-

(1) कहानी घटना प्रधान नहीं, संवाद प्रधान होनी चाहिए ।

By Chalia Sir

(2) कहानी एक्शन या हरकतों पर पूरी तरह नहीं होनी चाहिए क्योंकि रेडिओं पर एक्शन को ध्वनि प्रभावों के सहारे सुनना ऊबाऊ हो सकता है।

(3) रेडिओं नाटक की कहानी 15 - 30 मिनट की अवधि में इसे प्रस्तुत किया जा सके, रेडिओं जैसे श्रव्य माध्यम के लिए मनुष्य की एकाग्रता बहुत अधिक नहीं होती ।

(4) रेडिओं नाटक कहानी में पात्रों की संख्या:-

(i) 15 - 30 मिनट में - 5 से 4 पात्र

(ii) 30 - 40 मिनट में - 8 से 12 पात्र

👉 रेडिओं नाटक की बुनियादि बातें:-

(1) ऐसी कहानी का चयन करें जो छोटी हो, पात्र कम हों, कहानी घटना प्रधान न हो।

(2) संवादो अनुरूप लेखन

(3) पात्रों के संवाद में भाषा या शब्द चयन पर ध्यान दें जिससे पता चले कि पात्र पढ़ा लिखा है या अनपढ़, गांव का है या शहर का, जवान है या वृद्ध ।

(4) रेडिओं नाटक में संवाद और ध्वनि प्रभाव ही महत्वपूर्ण है।

(5) रेडिओं नाटक में कहानी एक्शन पर आधारित न हों।

(6) सिनेमा या रंगमंच के लिए कहानी खेल (क्रिकेट, फुटबाल, दंगल) हो सकता है, अपराधी हो सकता है पर रेडिओं नाटक के लिए नहीं।

(7) ध्वनि संकेतों का प्रयोग - जंगल का दृश्य - डरावनी आवाज, जंगली जानवरों की आवाज, पदचाप तथा संवादों का उतार - चढाव ।

By Chalia Sir

अध्याय - 10

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

- अप्रत्याशित लेखन से अभिप्राय:- अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का आशय कम समय में उन्हें सुन्दर और सुघड़ ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है।

👉 अप्रत्याशित लेखन की विशेषताएँ:-

1. यह एक सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है, इसके लिए निर्धारित शैली की जरूरत नहीं है।

2. ऐसे लेखन के लिए परम्परागत विषयों से अलग ऐसे विषयों का चयन किया जाता है जिस पर लिखने के लिए पहले से उपलब्ध सामग्री की बजाय मौलिक चिंतन एवं विचारों की आवश्यकता होती है।

3. ऐसे लेखन जिसमें वस्तुनिष्ठ या तथ्यात्मक जानकारियों की बाध्यता नहीं होती बल्कि मौलिक कल्पना और चिंतन को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

4. लेखन में विषय के अनुरूप एक या एक से अधिक कोणों से विचार किया जा सकता है।

5 भाषा तथा विचारों में प्रवाह, सुसंबंधता एवं तारतम्यता होने चाहिए।

👉 अप्रत्याशित लेखन के तत्व :-

(1) मौलिक चिंतन

(2) कल्पनाशीलता

(3) स्मृति

(4) भाषा पर पकड़

(5) दार्शनिक मिज़ाज

(6) अवलोकन आधारित

By Chalia Sir

विगत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

1. रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा और शैली की विशेषता लिखिए ? 2015

Ans:- रेडियो और टेलीविजन आम आदमी के माध्यम है। इनमें भाषा ऐसी प्रयोग में लेनी चाहिए कि वह सभी को आसानी से समझ में आ सके। सरल भाषा लिखने का बेहतर उपाय है कि वाक्य छोटे, सीधे और स्पष्ट देखे जाएं। निम्नलिखित, उपरोक्त, अधोहस्ताक्षरित और क्रमांक आदि शब्दों का प्रयोग रेडियो और टी.वी. माध्यमों में बिल्कुल मना है साफ़ सूथरी और सरल भाषा लिखने के लिए गैर जरूरी विशेषणों, सामाजिक और तत्सम शब्दों, अंतिरंजित उपमाओं आदि से बचना चाहिए।

2. कहानी एवं नाटक की सामान्य बताने वाले तत्वों का उल्लेख कीजिए ? 2015

Ans:- नाटक और कहानी दोनों में कहानी का केंद्र बिंदु कथानक होता है। दोनों में एक कहानी होती है। दोनों में में पात्र होते हैं। (i) कहानी और नाटक दोनों में एक कहानी होती है।

(ii) पात्र होते है। (iii) संवाद (iv) द्वंद (v) चरम उत्कर्ष (vi) देशकाल, वातावरण, परिवेश

(vii) दोनों का क्रमिक विकास होता है।

3. टी.वी. खबरों के विभिन्न चरणों का उल्लेख कीजिए ? 2015

Ans:- किसी भी टी.वी. चैनल पर खबर देने का मूल आधार वही होता है जो प्रिंट या रेडियो पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रचलित है यानी सबसे पहले सूचना देना। टी.वी. में भी यह सूचनाएं कई चरणों से होकर दर्शकों के पास पहुंचती है।

- यह चरण है- 1. फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़, 2. ड्राई एंकर, 3. फोन इन,

4. एंकर बाइट, 5. एंकर पैकेज, 6. एंकर विजुअल, 7. लाइव

4. समाचार लेखन में 6 ककारों के बारे में संक्षिप्त में लिखिए ? 2015

Ans:- छह ककारों में पहले चार ककार - क्या, कौन, कब और कहां - सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं जबकि अंतिम दो कंकार - कैसे और क्यों - विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर आधारित होते हैं।

5. रेडियो नाटक की अवधि और पात्र के बारे में लिखिए ? 2015

Ans:- रेडियो नाटक की अवधि सीमित (15 से 30 मिनट) होती इसी कारण पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए।

6. जनसंचार के माध्यम कौन - कौन से है वर्णन कीजिए 2016

Ans:- जनसंचार की अनेक माध्यम है जैसे - मुद्रित (प्रिंट), रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट। मुद्रित अर्थात् समाचार पत्र - पत्रिकाएं पढ़ने के लिए, रेडियो सुनने के लिए टी.वी. देखने के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण है। किंतु इंटरनेट पर पढ़ने, देखने और सुनने तीनों की आवश्यकता पूरी हो जाती है।

By Chalia Sir

7. पत्रकारीय लेखन में समाचार कैसे लिखा जाता है ? 2016

Ans:- समाचार लेखन में वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है यानी समाचार लिखते हुए रिपोर्टर उसमें अपने विचार नहीं डाल सकता जबकि फ़ीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ ज़ाहिर करने का अवसर होता है।

8. नाटक को प्रभावी बनाने वाली कौन-कौन सी बातें हैं लिखिए ? 2016

Ans:- 1. समय का बंधन 2. शब्द 3. कथ्य/ स्वरूप 4. संवाद 5. शिल्प

9. नए और अप्रत्याशित लेखन में कैसी तैयारी होनी चाहिए ? 2016

Ans:- नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन करने के लिए तैयारी करने के लिए हमें विषय के बारे में अच्छे से समझना, विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्र करना और अच्छे विचार विकसित करने की आवश्यकता होती है।

10. अच्छे लेखन की एक विशेषता बताइए ? 2017

Ans:- (i) छोटे-छोटे वाक्य लिखें। जटिल वाक्य की तुलना में सरल वाक्य संरचना को वरीयता दें।

(ii) आम बोलचाल की भाषा और शब्दों का इस्तेमाल करें। गैर - जरूर शब्दों का के इस्तेमाल से बचें।

11. रेडियो माध्यम की किसी एक सुविधा को अंकित कीजिए ? 2017

Ans:- रेडियो श्रोताओं का मनोरंजन करने और उन्हें मंत्रमुग्ध करने के लिए ध्वनि और संगीत प्रभावों की एक असीम बहुतायत का भी उपयोग कर सकता है।

12. समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय एवं उपयोगी शैली कौन सी है ? 2017

Ans:- उल्टा पिरामिड में समाचार का ढाँचा है कि इसे समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड-शैली (इंवर्टेड पिरामिड स्टाइल) के नाम से जाना जाता है। यह समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है।

13. टिप्पणी किसे कहते हैं ? 2017

Ans:- संक्षिप्त रूप में लिखने की क्रिया। टिप्पणी शब्द का सामान्य अर्थ किसी मामले में राय या सम्मति देना होता है।

14. टी.वी. समाचारों की विशेषता संक्षिप्त में लिखिए ? 2018

Ans:- टेलीविजन संचार का सर्वाधिक ताकतवर एवं लोकप्रिय माध्यम है। इसमें शब्द, ध्वनि वे दृश्य का मेल होता है। जिसके कारण उसकी विश्वसनीयता कई गुना बढ़ सकती है। भारत में इसकी शुरुआत 15 सितंबर 1959 को हुई।

15. समाचार लेखन में इंट्रो क्या है इसका महत्व लिखिए ? 2020

Ans:- इंट्रो समाचार का मुख्य भाग होता है। इसमें खबर की मूल तत्व को शुरू की दो या तीन पंक्तियों में बनाया जाता है।

By Chalia Sir

16. फीचर लेखन को परिभाषित करते हुए फीचर के चार प्रकार लिखिए ? 2020

Ans:- फीचर शब्द लैटिन के Fuctura से बना है, जिसका हिंदी अर्थ आकृति, विशेषता होता है। मनोरंजक ढंग से लिखा गया प्रासंगिक लेख। चार प्रकार:- (i) व्यक्तिगत फीचर, (ii) समाचारपरक फीचर, (iii) चित्रपरक फीचर, (iv) साक्षात्कार फीचर

17. साक्षात्कार को परिभाषित करते हुए साक्षात्कार के प्रकार लिखिए ? 2020

Ans:- सामान्यत: दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा किसी विशेष उद्देश्य से आमने-सामने की कोई बातचीत को साक्षात्कार कहा जाता है। व्यक्तिगत साक्षात्कार, फ़ोन साक्षात्कार, आभासी साक्षात्कार, पैनल साक्षात्कार और अनौपचारिक साक्षात्कार।

18. रिपोर्ताज एवं यात्रा वृतांत के अंतर को स्पष्ट कीजिए ? 2020

Ans:- रिपोर्ताज - किसी घटना का तथ्यात्मक लेखा-जोखा रिपोर्ट कहलाता है और जब इस रिपोर्ट को कलात्मक साहित्यिक शैली में कल्पना व संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया जाए तो उसे रिपोर्ताज कहा जाता है

यात्रा वृत्तांत - यात्रा वृत्तांत एक यात्रा का विवरण है जो स्थानिक जानकारी प्रदान करता है। यात्रा वृतान्त में आमतौर पर स्थान, परिवहन, मौसम और आवास शामिल होते हैं।

19. डायरी लेखन को स्पष्ट करते हुए उसके महत्व को समझाइए ? 2020

Ans:- डायरी लेखन एक कलात्मक क्रिया है। एक डायरी को हम अपने विश्वस्त मित्र की तरह मान सकते हैं, जहां हम अपने

सुख-दुःख, विचारों, विमर्श, और काम की संबंधित गोपनीयता को बिना झिझक के प्रकट कर सकते हैं। डायरी लेखन हमारे

मानसिक विकास और सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है। यह लेख एक आधार है।

20. डायरी लेखन की प्रमुख विशेषताएं लिखिए ? 2021

Ans:- डायरी आधुनिक काल का शब्द है। डायरी शैली आत्मकथात्मक, भावप्रवण गद्य विधा है। डायरी लिखने में व्यक्ति सापेक्षता अधिक रहती है। डायरीकार अपनी भावना के प्रति ईमानदार होता है। डायरी लेखन डायरीकार की प्रामाणिकता अभिव्यक्ति होती है।

21. रिपोर्ताज की परिभाषा लिखती हुई उनकी विशेषताएं लिखिए ? 2021

Ans:- रिपोर्ताज - किसी घटना का तथ्यात्मक लेखा-जोखा रिपोर्ट कहलाता है और जब इस रिपोर्ट को कलात्मक साहित्यिक शैली में कल्पना व संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया जाए तो उसे रिपोर्ताज कहा जाता है • रिपोर्ताज ऑखों देखा वर्णन जैसा प्रतीत होता है। • इसमें सम-सामयिक घटनाओं को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। • इसमें निजी-सूक्ष्म निरीक्षण के आधार पर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण होता है। • इसकी शैली विवरणात्मक तथा वर्णनात्मक होती है। • यह पत्रकारिता के गुणों से सम्पन्न होता है।

22. पत्रकारिता के विभिन्न प्रकारों का सामान्य परिचय लिखिए ? 2021

Ans:- पत्रकार के प्रकार:- (i) पूर्वकालिक पत्रकार - किसी समाचार संगठन में काम करने वाला नियमित वेतन भोगी कर्मचारी होता है। (ii) अंशकालिक पत्रकार - किसी समाचार संगठन के लिए निश्चित मानदेय पर काम करने वाला। (iii) फ्रीलांसर (स्वतंत्र) - भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखता है।

By Chalia Sir

23. फिल्मी पत्रकारिता पर लेख लिखिए ? 2021

Ans:- फिल्म पत्रकारिता में फिल्मों का एक जटिल विश्लेषण और मूल्यांकन किया जाता है और उसके बाद एक निर्णय लिया जाता है जिससे पता चलता है कि वह फिल्म अच्छा है या बुरा है। एक फिल्म पत्रकार वह होता है जो फिल्म या मनोरंजन उद्योग से संबंधित फिल्मों, अभिनेता और लोगों के बारे में रिपोर्ट करता है।

24. इंटरनेट पत्रकारिता से क्या आशय है ? 2022

Ans:- इंटरनेट पर समाचार पत्र का प्रकाशन अथवा खबर का आदान-प्रदान ही इंटरनेट पत्रकारिता है।

25. मुद्रित माध्यमों में लेखन के लिए किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? 2022, 2023

Ans:- मुद्रित माध्यम में लेखन के लिए भाषागत शुद्धता का ध्यान रखना चाहिए। प्रचलित भाषा का प्रयोग किया जाए। लेखन में तारतम्यता, सहज प्रवाह, समय, शब्द व स्थान की सीमा का ध्यान रखा जाना चाहिए।

26. पत्रकारीय लेखन पर टिप्पणी लिखिए ? 2022

Ans:- अखबारों या पत्रिकाओं में समाचार फीचर विशेष रिपोर्ट लेख आदि लिखने की अलग-अलग पद्धति होती है जिनका ध्यान रखना चाहिए। समाचार लेखन में उल्टा पिरामिड शैली का उपयोग किया जाता है, वही छह ककारों का भी ध्यान रखा जाता है। फीचर लेखन की शुरुआत कहीं से भी की जा सकती है। इसके साथ ही विशेष रिपोर्ट लेखन के तथ्यों की खोज और विश्लेषण पर जोर दिया जाता है।

27. जनसंचार के माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम कौन सा है ? 2022

Ans:- जनसंचार के माध्यमों में मुद्रित (प्रिंट) माध्यम सबसे पुराना माध्यम है इसके अंतर्गत समाचार, पत्र - पत्रिकाएं आती है।

28. समाचार की शुरुआत में प्रयुक्त होने वाले दो ककार लिखिए ? 2022

Ans:- शुरूआत में चार ककार - क्या, कौन, कब, और कहाँ

29. रेडियो के लिए समाचार लेखन में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए ? 2022

Ans:- रेडियो समाचार लेखन में दो बुनियादी बातों का ध्यान रखना जरूरी है- 1 समाचार साफ-सुथरी और टाइप कॉपी में हो।
2. डेडलाइन, संदर्भ और संक्षिप्ताक्षर स्पष्ट अंकित हो

30. अनुभाग शब्द के लिए परिभाषित शब्द लिखिए ? 2023

Ans:-

31. प्रमुख समाचार माध्यमों के नाम लिखिए ? 2023

Ans:- वर्तमान में समाचार या जनसंचार के प्रमुख माध्यम निम्नलिखित हैं।

(i) प्रिंट माध्यम - इसके अंतर्गत पत्र पत्रिकाएं आती है। (ii) श्रव्य माध्यम - इसके अंतर्गत रेडियो आता है। (iii) श्रव्य दृश्य माध्यम - इसके अंतर्गत टेलीविजन, सिनेमा आते हैं। (iv) नव माध्यम - इसके अंतर्गत इंटरनेट आता है।

By Chalia Sir

32. वर्तमान इंटरनेट पत्रकारिता के बारे में संक्षिप्त में लिखिए ? 2023

Ans:- इंटरनेट पत्रकारिता का अर्थ पत्रकार द्वारा सूचना और डेटा खोजने के लिए इंटरनेट का उपयोग करना भी है। इंटरनेट बड़ी मात्रा में तथ्यात्मक जानकारी का भंडार बन गया है और एक रिपोर्टर के लिए एक तेज़ और आसान स्रोत हो सकता है।

33. फीचर लेखन के बारे में लिखिए ? 2023

Ans:- फीचर लेखन एक अच्छी पत्रकारिता है। एक उत्तम फीचर उसे ही माना जाता है जो उचित विषय पर आधारित हो, आकर्षक रूप में तथ्यों को प्रस्तुत करें, शैली में शालीनता हो तथा पत्र-पत्रिका में अपनी पहचान बनाये रखे।

34. समाचार लिखने की एक विशेष शैली होती है। इन शैलियो के नाम लिखिए ? 2023

Ans:- समाचार लेखन की सर्वाधिक लोकप्रिय शैली उल्टा पिरामिड शैली है। जिसे तीन भागों में बांटा जाता है - इंट्रो, बॉडी और समापन। इसमें सर्वप्रथम सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण तथ्य को तथा उसके उपरांत महत्व की दृष्टि से घटिते क्रम में तथ्यों को रखा जाता है।

35. समाचार माध्यमों में एक सफल साक्षात्कार के लिए किन-किन गुणों की आवश्यकता होती है ? 2023

Ans:- सफल साक्षात्कार में नम्रता, व्यवहार कुशलता, जिज्ञासा, वाकपटुता, पात्र को सुनने का धैर्य, भाषा पर अधिकार तथा बात निकलवाने की कला, मनोविज्ञानिक का ज्ञान, बदलती परिस्थितियों के अनुसार बातचीत करने को मोड़ देने की कला होनी चाहिए।

36. नाटक का सबसे जरूरी और सशक्त माध्यम कौन सा है ? 2023

Ans:- नाटक का सबसे जरूरी और सशक्त माध्यम है - संवाद। दूसरी किसी विद्या के लिए यह बिल्कुल आवश्यक नहीं है कि वह संवादों का सहारा ले। परंतु नाटक में संवाद के बिना काम नहीं चल सकता। नाटक के लिए तनाव, उत्सुकता, रहस्य, रोमांच और उपसंहार जैसे तत्व अनिवार्य हैं। इसमें विरोधी विचारधाराओं के संवाद होना आवश्यक है। संवाद से ही नाटक कमजोर या सशक्त बनता है।

37. विशेष लेखन में डेस्क क्या होता है ? 2023

Ans:- समाचार पत्रों और पत्रिकाओं, टी.वी. और रेडियो चैनल में विशेष लेखन की व्यवस्था को डेस्क कहते हैं। और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का भी अलग समूह होता है। यथा - व्यापार, कारोबार तथा खेल के लिए अलग-अलग डेस्क निर्धारित होते हैं।

38. शब्दकोश क्या है ? 2022

Ans:- शब्दों की व्याख्या तथा शब्दों के स्पष्टीकरण का संग्रह होता है।

By Chalia Sir

अभिव्यक्ति और माध्यम के प्रश्न

- वस्तुनिष्ठ प्रश्न-1अंक × 2 प्रश्न=2अंक

- लघुत्तरात्मक 2 अंक 1 प्रश्न= 2 अंक (20 से 30 शब्द)

* वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

👉 " खबर लिखना उतना ही रचनात्मक कार्य है जितना कविता लिखना" - रघुवीर सहाय

👉 "जहां अखबार पढ़ने के लिए है, वही रेडियो सुनने के लिए टीवी देखने के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण है।" - रघुवीर सहाय

👉 "खबर और कविता दोनों का उद्देश्य मनुष्य को और समाज को ताकत पहुंचना है। " - रघुवीर सहाय (हिंदी के प्रमुख कवि एवं पत्रकार)

👉 इंटरनेट पर पढ़ने, सुनने और देखने तीनों की ही सुविधा है, अतः यह प्रिंट माध्यम, श्रव्य माध्यम और श्रव्य दृश्य माध्यम सबका मिश्रित रूप (समेकित माध्यम) है।

👉 अखबार छपे हुए शब्दों का माध्यम है, जबकि रेडियो बोले हुए शब्दों का।

👉 जनसंचार के माध्यमों की असली शक्ति उनके परस्पर पूरक होने में है।

👉 इंटरनेट अंतरक्रियात्मकता (इंटर एक्टिविटी) और सूचनाओं का विशाल भंडार है।

👉 प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम आधुनिक जनसंचार माध्यमों में सबसे पुराना है।

👉 आधुनिक युग की शुरुआत ही मुद्रण यानी छपाई से हुई।

👉 मुद्रण कला की शुरुआत चीन से हुई।

👉 छापेखाने अर्थात प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार का श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को दिया जाता है।

👉 यूरोप में पुनर्जागरण रेनेसां की शुरुआत में छापेखाने की अहम भूमिका थी।

👉 भारत में पहला छापाखाना सन 1556 में गोवा में खुला...... ईसाई मिशनरीयों यानी धर्म प्रचारको द्वारा।

👉 गुटेनबर्ग..... पूरा नाम - योहानूस गुटेनबर्ग (जर्मनी) जीवनकाल सन् 1400 -1468 ई.

मुद्रक/छापाखाना / प्रेस के आविष्कारक।

👉 गोवा में भारत का प्रथम छापाखाना ईसाई मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तक के छापने के लिए खोला था।

👉 मुद्रित माध्यम की विशेषताएं-

1. छपे हुए शब्दों में स्थायित्व

2. लिखित भाषा का विस्तार

3. चिंतन, विचार, विश्लेषण का माध्यम

👉 लिखित भाषा अनुशासन की मांग करती है।

👉 मुद्रित माध्यम निरक्षरों (अनपढ़ों) के लिए उपयोगी नहीं है।

By Chalia Sir

👉 मुद्रित माध्यम में तुरंत घटी घटनाओं का संचालन नहीं कर सकते।

👉 डेडलाइन - अखबार / पत्रिका / रिपोर्ट को प्रकाशन के लिए स्वीकार करने की एक निश्चित समय सीमा होती है, उसे डेडलाइन कहते हैं।

👉 प्रकाशन की समय सीमा - डेडलाइन

👉 स्पेस का पूरा ध्यान रखा जाता है... प्रिंट मीडिया में

👉 रेडियो एक श्रव्य माध्यम है।

👉 रेडियो में सब कुछ "ध्वनि स्वर और शब्दों" का खेल है।

👉 श्रोताओं द्वारा संचालित है - रेडियो

👉 रेडियो माध्यम है - एक रेखीय (लिनीयर)

👉 टेलीविजन भी एकरेखीय माध्यम है, उसमें दृश्यों व तस्वीरों का महत्व ज्यादा होता है।

👉 समाचार लेखन में 'उल्टा पिरामिड शैली' का प्रयोग किया जाता है।

👉 उल्टा पिरामिड शैली में सबसे पहले सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को दिखाया जाता है उसके बाद महत्व के अनुसार घटते क्रम में समाचार दिखाई जाते हैं।

👉 उल्टा पिरामिड शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता।

👉 उल्टा पिरामिड शैली को तीन हिस्सों में बांट सकते हैं

1. इंट्रो / लीड / मुखड़ा /आमुख

2. बॉडी.

3. समापन

👉 रेडियो समाचार कॉपी को कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाता है।

👉 रेडियो समाचार की एक लाइन में अधिकतम 12 - 13 शब्द होते हैं।

👉 टेलीविजन एक श्रव्य दृश्य माध्यम है।

👉 टी.वी. पर सबसे पहले कोई बड़ी खबर फ्लेश (ब्रेकिंग न्यूज़) के रूप में तत्काल दशकों तक पहुंचाई जाती है।

👉 खबर को बिना दृश्य के सीधे - सीधे पढ़ना - ड्राई एंकर

👉 टी.वी. के लिए खबर लिखने की बुनियादी शर्त - दृश्य के साथ लेखन

👉 एंकर (रिपोर्टर), संवाददाता से फोन पर बात करके सूचनाएं दर्शकों तक पहुंचना है, इसे कहते हैं - फोन इन

👉 एंकर दृश्य के साथ खबर को पढ़ता है, यह कहलाता है - एंकर विजुअल

👉 टेलीविजन में किसी खबर को पुष्टि देने के लिए संबंधित बाइट दिखाई जाती है।

👉 बाइट का अर्थ है - कथन

By Chalia Sir

👉 घटनास्थल पर प्रत्यक्षदर्शी का एक कथन दिखाकर या सुनाकर खबर को प्रमाणिकता दी जाती है, इसे एंकर बाइट कहते हैं।

👉 खबर का घटना स्थल से सीधा प्रसारण कहलाता है - लाइव

👉 किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का जरिया – एंकर पैकेज

👉 टीवी में किसी खबर में पहला वाक्य शुरु होता है - दृश्य वर्णन से

👉 V. O. VOICE OVER - प्राकृतिक आवाज़ जैसे - चिड़िया का चहचहाना

👉 वे आवाज़ जो खबर शूट करते वक्त खुद ब खुद चली आती है टीवी में ऐसी ध्वनियों को कहते हैं - नेट या नेट साउंड

👉 टीवी रेडियो में कैसी भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए - आम बोलचाल की भाषा

👉 इंटरनेट क्या है सिर्फ - एक टूल /औजार

👉 इंटरनेट पर खबरों का प्रकाशन व आदान-प्रदान कहलाता है - इंटरनेट पत्रकारिता

👉 विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर चल रहा है-

पहला दौर 1982 - 1992

दूसरा दौर 1993 - 2001

तीसरा दौर 2002 से अब तक

👉 भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का दूसरा दौर चल रहा है.

पहला दौर - 1993 से 2002 ई

दूसरा दौर - 2003 ई से अब तक

👉 हिंदी में नेट पत्रकारिता की शुरुआत हुई - वेब दुनिया से

👉 हिंदी का पहला संपूर्ण पोर्टल - नई दुनिया समूह (इंदौर से संचालित)

👉 वह अखबार जो प्रिंट रूप में उपलब्ध न होकर सिर्फ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है - प्रभा साक्षी

👉 वर्तमान में हिंदी की सर्वश्रेष्ठ वेबसाइट - बीबीसी

👉 हिंदी पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या - हिंदी के फॉन्ट की

👉 समाचार लेखन में क्या, कौन, कहां, कब, क्यों, कैसे आदि क्या कहलाते हैं - ककार

👉 मुद्रित माध्यम में समाचार लेखन की विशेषता होगी - सरल भाषा, भाषा की मौलिकता, स्पष्टता

👉 मीडिया की भाषा में किसी खबर को कहते हैं - स्टोरी

👉 वह खबर जो समाचार के मुख्य पृष्ठ पर लिखी जाती है, उसे कहते हैं - कवर स्टोरी

👉 किसी भी समाचार का सारांश रूप कहलाता है – संपादकीय

👉 संपादकीय का प्रमुख सिद्धांत क्या है - वस्तुपरकता

👉 किसी भी घटना, सूचना, समारोह, कार्यक्रम आदि पर अपनी प्रतिक्रिया देना कहलाता है - प्रतिवेदन या रिपोर्ट

By Chalia Sir

👉 जब दो व्यक्ति आमने - सामने एक दूसरे से बात करते हुए जानकारी देते हैं, इस विधा को क्या कहते हैं - साक्षात्कार

👉 साक्षात्कार का प्रमुख आधार है - संवाद

👉 साक्षात्कार मूल रूप से दो प्रकार का होता है - 1. माध्यमोपयोगी 2. प्रतियोगितात्मक

👉 किसी देश की आर्थिक स्थित, प्रगति, विश्लेषण की दृष्टि से की गई पत्रकारिता कहलाती है - आर्थिक पत्रकारिता

👉 फिल्म जगत से संबंधित पत्रकारिता - फिल्म पत्रकारिता

👉 विज्ञान से संबंधित है - विज्ञान पत्रकारिता

👉 खेल से संबंधित पत्रकारित - खेल पत्रकारिता

👉 पत्रकारिता के रूप कितने होते हैं - तीन (पूर्णकालिक, अंशकालिक, फ्रीलांसर)

👉 सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचना और आंकड़ों की गहरी छानबीन किसके अंतर्गत की जाती है - इनडेप्थ रिकॉर्ड

👉 आवश्यकता के अनुसार भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचार पत्रों को अपनी खबरें पहुंचाने वाला पत्रकार क्या कहलाता है - फ्रीलांसर पत्रकार

👉 टेलीविजन पर किसी कार्यक्रम के दौरान कोई विशेष समाचार या सूचना पर्दे पर नीचे पट्टी के रूप में दिखाई देना क्या कहलाता है - ब्रेकिंग न्यूज़

👉 जब कोई मीडिया समाचार की मुख्य धारा के साथ तालमेल बिठाकर नहीं चलता तो उसे कहते हैं - वैकल्पिक पत्रकारिता

👉 समाचार लेखन में 6 ककारों का प्रयोग किया जाता है।

👉 6 ककार निम्नलिखित है - क्या, कौन, कब, कहाँ, कैसे, क्यों।

👉 वर्तमान समय में प्रिंट मीडिया (मुद्रित माध्यम) लेखन अभिव्यक्ति का सशक्त एवं सर्वव्यापी माध्यम है।

👉 अदालती कार्यवाही से जुड़े समाचार अदालती समाचार कहलाते हैं।

👉 किसी स्थान विशेष की यात्रा का वर्णन शब्दबद्ध किया जाना कहलाता है -. यात्रा वृतांत

👉 प्रातः काल उठने से लेकर रात्रि में सोने तक प्रतिदिन के सभी कार्य का विवरण करना कहलाता है - डायरी लेखन, दैनंदिनी, दैनिकी, रोजनामचा।

👉 किसी खास घटना के लिए अन्य सामान्य खबरों से हटकर किया गया लेखन कहलाता है - विशेष लेखन

👉 किसी भी कहानी अथवा उपन्यास को एक दृश्य के रूप में लिखना कहलाता है - पटकथा।

👉 वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरु करने का श्रेय जाता है - तहलका डॉट कॉम को

* लघुत्तरात्मक प्रश्न (20 से 30 शब्द) By Chalia Sir

1. जनसंचार के प्रमुख माध्यम कौन - कौन से हैं ?

उत्तर- वर्तमान में जनसंचार के प्रमुख माध्यम निम्नलिखित है-

1) प्रिंट माध्यम - इसके अंतर्गत पत्र -पत्रिकाएं आती है।

By Chalia Sir

2) श्रव्य माध्यम - इसके अंतर्गत रेडियो आता है।

3) श्रव्य दृश्य माध्यम - इसके अंतर्गत टेलीविजन, सिनेमा आते हैं।

4) नवमाध्यम - इसके अंतर्गत इंटरनेट आता है। (समेकित माध्यम इंटरनेट)

2. जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम क्या है? इसके अंतर्गत क्या-क्या माध्यम आते हैं?

उत्तर- जनसंचार का पुराना माध्यम मनुष्य है। पौराणिक काल में देवर्षि नारद समाचार वाचक थे। जनसंचार के अन्य प्रमुख पुराने साधन निम्नलिखित है- शिलालेख, गुफा चित्र, विविध नाट्य रूप यथा कथा वाचन, सॉन्ग, रागनी, तमाशा लावणी, नौटंकी, जात्रा एवं यश गान आदि।

3. मुद्रित माध्यम की प्रमुख विशेषताएं क्या है?

उत्तर - मुद्रित माध्यम की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है-

1) स्थायित्व - मुद्रित माध्यम में लिखे शब्द स्थाई होते हैं। उन्हें आराम से धीरे - धीरे सुविधानुसार पढ़ा जा सकता है। उन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है और संदर्भ ग्रंथ की तरह प्रयोग किया जा सकता है।

2). विचार चिंतन और विश्लेषण का माध्यम - प्रिंट मीडिया में स्थायित्व होने के कारण हम लिखित सामग्री पर विचार व चिंतन कर सकते हैं और उस सामग्री का विश्लेषण भी कर सकते हैं, अपनी राय प्रकट कर सकते हैं।

4. आधुनिक युग में जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम क्या है?

उत्तर - प्रिंट अर्थात मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यम में सबसे पुराना है। आधुनिक युग का प्रारंभ ही मुद्रण या छपाई के आविष्कार से चीन में हुआ, पर आज हम जिस छापेखाने (प्रेस) को देखते हैं, इसका श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को है।

5. "मुद्रित माध्यम विचार, चिंतन और विश्लेषण का माध्यम है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - मुद्रित माध्यम में लिखित समाचार स्थाई होते है, साथ ही इसके पाठक साक्षर होते हैं। उनके पास न केवल समझने और सोचने का समय होता है बल्कि उनमें योग्यता भी होती है। वे समाचार को आराम से पढ़कर उन पर विचार व चिंतन करते हैं और विश्लेषण भी करते हैं। स्पष्ट है कि मुद्रित माध्यम चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम है।

6. मुद्रित माध्यम की मुख्य कमियों के बारे में लिखिए।

उत्तर- मुदित माध्यम की प्रमुख कमियां निम्नलिखित है-

1) मुद्रित माध्यम की सबसे बड़ी कमी है कि यह निरक्षरों के लिए अनुपयोगी है।

2) इसमें पाठकों की योग्यता, रुचि और जरूरत का ध्यान रखना आवश्यक है।

3) डेडलाइन - मुद्रित माध्यम एक निश्चित समय सीमा में प्रकाशित होते हैं। इसमें रेडियो, टीवी, इंटरनेट की भांति तुरंत घटी घटनाओं का विवरण उपलब्ध नहीं होता।

By Chalia Sir

7. मुद्रित माध्यम के लेखक और पत्रकारों को क्या सावधानी रखनी पड़ती है?

उत्तर - मुद्रित माध्यम के लेखक और पत्रकारों को अपने पाठकों के भाषा ज्ञान, शैक्षिक योग्यता तथा रुचियां का ध्यान रखना पड़ता है। उनको प्रकाशन के लिए प्राप्त सामग्री की समय सीमा व शब्द सीमा के प्रति भी सचेत रहना होता है। समाचार छापने से पूर्व सामग्री की शुद्धता, तारतम्यता, स्वाभाविक प्रवाह आदि का भी ध्यान रखना होता है।

8. रेडियो माध्यम के बारे में लिखिए।

उत्तर - रेडियो एक श्रव्य माध्यम है, जिसमें सब कुछ ध्वनि, स्वर और शब्दों का खेल होता है। यह पूर्णतया श्रोताओं से संचालित माध्यम है। रेडियो का श्रोता अखबार की तरह स्वतंत्र नहीं होता, रेडियो समाचार बुलेटिन को शुरु से लेकर अंत तक पूरा सुनना होता है। इसमें समाचार को पहले या बाद में अपनी मर्जी से सुनने की सुविधा श्रोता को नहीं होती।

9. रेडियो समाचार की संरचना शैली के बारे में लिखिए ?

उत्तर - रेडियो समाचार की संरचना शैली अखबारों या टीवी की भांति उल्टा पिरामिड (इनवर्टेड पिरामिड) शैली पर आधारित होती है। इस शैली में सबसे महत्वपूर्ण खबर व संपूर्ण समाचार का सार इंट्रो अर्थात लीड के माध्यम से पहले ही बता दिया जाता है, फिर महत्व के अनुसार घटते क्रम में संपूर्ण सूचना प्रस्तुत की जाती है। बॉडी में समाचार की व्याख्या की जाती है।

10. उल्टा पिरामिड शैली के बारे में बताइए।

उत्तर - समाचार लेखन में उल्टा पिरामिड शैली का उपयोग किया जाता है। उल्टा पिरामिड शैली के तीन भाग होते हैं-

1) इंट्रो- इस लीड, मुखड़ा और आमुख भी कहते हैं। इसमें समाचार के महत्वपूर्ण तथ्य व सार अर्थात क्लाइमैक्स लिख दिया जाता है।

2) बॉडी - इसमें समाचार की व्याख्या कर दी जाती है। यह व्याख्या महत्व के अनुसार घटते क्रम में होती है।

3) समापन समाचार के अंत में दो-तीन पंक्तियों में समाचार का समापन कर दिया जाता है।

By Chalia Sir

11. उल्टा पिरामिड शैली की विशेषताएं बताइए।

उत्तर - उल्टा पिरामिड शैली की निम्नलिखित विशेषताएं हैं -

1) उल्टा पिरामिड शैली में समाचार का सबसे महत्वपूर्ण भाग व सार इंट्रो के रूप में समाचार के प्रारंभ में लिख दिया जाता है।

2) उल्टा पिरामिड शैली में घटना, विचार, समस्या का विवरण काल-क्रम के अनुसार न होकर महत्व के आधार पर घटते क्रम में होता है।

3) उल्टा पिरामिड शैली का चरम उत्कर्ष अंत में ना होकर शुरु मैं ही आ जाता है तथा इस शैली में कोई निष्कर्ष भी नहीं होता।

12. रेडियो के लिए समाचार कॉपी तैयार करते समय किन प्रमुख बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर- रेडियों के लिए समाचार कॉपी तैयार करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

1) समाचार कॉपी टाइप्ड और साफ सुथरी होनी चाहिए ताकि समाचार वाचक बीच में बिना अटके सही पढ़े।

2) समाचार कॉपी कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप होनी चाहिए।

3) एक पंक्ति में ज्यादा से ज्यादा 12-13 शब्द होने चाहिए।

4) समाचार कॉपी में उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्त अक्षरों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

13. समाचार लेखन में ककारों के बारे में बताइए?

उत्तर -समाचार लेखन में जिन 6 प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है, उन्हें समाचार लेखन के ककार कहते हैं।

ये निम्नलिखित है - कौन, क्या, कब, कहां, क्यों, कैसे। इनमें प्रथम चार सूचनात्मक होते हैं जिनके द्वारा समाचार की सूचना दी जाती है। सूचनात्मक ककारों द्वारा क्लाइमेक्स प्रारंभ में ही बता दिया जाता है। अंतिम दो विवरणात्मक होते हैं। इनके द्वारा समाचार की व्याख्या की जाती है।

14. टेलीविजन लेखन में बुनियादी शर्त क्या है?

उत्तर:- टेलीविजन के लिए खबर लिखने की बुनियादी शर्त है - दृश्य के साथ लेखन। दृश्य अर्थात कैमरे से लेकर शॉट्स के आधार पर खबर बुनी जाती है। अगर शॉट्स बाजार का है तो खबर भी बाजार की ही होनी चाहिए न कि जंगल की। जो खबर सुनाई जा रही है, टीवी स्क्रीन पर उसी के चित्र दिखाए जाने चाहिए।

15. टीवी में सूचनाओं के कितने चरण होते हैं? लिखिए। अथवा टीवी में समाचार की प्रक्रिया बताइए।

उत्तर - टीवी में समाचार की प्रक्रिया निम्नलिखित सात चरणों में पूर्ण होती है - ब्रेकिंग न्यूज़, ड्राई एंकर, फोन इन, एंकर, विजुअल, एंकर बाइट, लाइव, एंकर पैकेज।

16. ब्रेकिंग न्यूज - टेलीविजन पर किसी कार्यक्रम के दौरान कोई भी विशेष समाचार या सूचना टेलीविजन के परदे पर नीचे की ओर एक पट्टी के रूप में दिखाई जाती है जिसे ब्रेकिंग न्यूज कहते हैं। यह अति महत्वपूर्ण समाचार होता है जो तुरंत दिखाया जाना चाहिए।

17. ड्राई एंकर - किसी भी घटना के चित्र प्राप्त नहीं होने तक समाचार वाचक (एंकर) द्वारा समाचार की सीधी जानकारी देना ड्राई एंकर कहलाता है। इसमें न्यूज़ रीडर या एंकर खबर को बिना चित्रों के सीधे-सीधे बताता है कि कहां, क्या, कब और कैसे हुआ।

18. फोन इन - किसी घटना या सूचना की विस्तृत जानकारी फोन से दर्शकों तक पहुंचाना फोन इन कहलाता है। इसमें स्टूडियो में उपस्थित संवाददाता घटनास्थल पर उपस्थित रिपोर्टर से फोन पर सारी जानकारी प्राप्त करता है और दर्शकों तक पहुंचाता है।

19. एंकर विजुअल - घटना या सूचना को प्राप्त दृश्य के साथ जोड़कर समाचार देना एंकर विजुअल कहलाता है। इसमें टीवी स्क्रीन पर चित्र व वीडियो होते हैं। उन चित्रों में वीडियो के आधार पर ही संवाददाता समाचार को पढ़ता है।

20. एंकर बाइट - एंकर बाइट में बाइट का अर्थ है ?

उत्तर - किसी घटना की प्रामाणिकता के लिए घटना से संबंधित व्यक्तियों या दर्शकों के कथन को दर्शाना एंकर बाइट कहलाता है। इससे समाचार विश्वसनीय और प्रभावी बनता है।

By Chalia Sir

21. लाइव - किसी घटनास्थल से समाचार दृश्यों का सीधा प्रसारण करना लाइव कहलाता है।

22. एंकर पैकेज किसी घटना को संपूर्णता के साथ दर्शकों तक पहुंचाना जिससे दर्शकों को घटना की पूर्ण जानकारी व सूचना मिल सके, एंकर पैकेज कहलाता है।

23. टेलीविजन तथा रेडियो में क्या समानता है?

उत्तर - रेडियो व टीवी समाचार में समानता रेडियो एवं टेलीविजन दोनों ही एकरेखीय (लिनीयर) माध्यम है। दोनों में समाचार बुलेटिन का स्वरूप एक सा होता है। दोनों माध्यमों में उल्टा पिरामिड शैली का उपयोग किया जाता है जिसमे महत्वपूर्ण तथ्य व समाचार प्रारंभ में, फिर महत्व के अनुसार घटते क्रम में समाचार होते हैं।

24. रेडियो व टीवी समाचार में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - रेडिओ व टीवी समाचार में अंतर - रेडियो जनसंचार का दृश्य माध्यम है जबकि टीवी श्रव्य दृश्य माध्यम है। रेडियो में शब्द तथा ध्वनि का महत्व है तो टेलीविजन में दृश्य के साथ लेखन महत्वपूर्ण है, शब्द व ध्वनि उनके पीछे चलते रहते हैं। रेडियो सस्ता एवं सुगम माध्यम है जबकि टेलीविजन रेडियो की तुलना में महंगा एवं दुर्गम माध्यम है।

25. रेडियो व दूरदर्शन समाचार की भाषा शैली कैसी होनी चाहिए?

उत्तर- रेडियो और दूरदर्शन की भाषा अत्यंत सरल होनी चाहिए। वाक्य छोटे, सीधे और स्पष्ट हो। आषा प्रवाहमयी तथा भ्रामक शब्दों से रहित हो। एक ही वाक्य में बात कही जाए। मुहावरों, सामासिक भाषा या अप्रचलित शब्दों, आलंकारिक शब्दावली आदि के प्रयोग से बचना चाहिए।

26. इंटरनेट की उपयोगिता के बारे में बताइए।

उत्तर- इंटरनेट जनसंचार का सर्वाधिक उपयोगी माध्यम है। इस पर संसार के किसी भी कोने में छपने वाले समाचार पत्र को पढ़ सकते हैं, रेडियो सुन सकते हैं, सिनेमा व टीवी समाचार देख सकते हैं। विश्वव्यापी जाल में छिपी हुई बातों में से अपने मतलब की बात को खोज सकते हैं। अपना ब्लॉग बनाकर पत्रकारिता की किसी बहस के सूत्रधार बन सकतें हैं।

27. इंटरनेट के गुण व दोष की चर्चा कीजिए।

उत्तर- इंटरनेट के गुण व दोष निम्नलिखित है-

गुण - इंटरनेट ने पढ़ने लिखने वालों, शोधकर्ताओं के लिए संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं। हमें विश्व ग्राम का सदस्य बना दिया है। हम संसार में घटित हो रही किसी भी घटना की सूचना तुरंत इंटरनेट पर प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट पर घर बैठे ऑनलाइन क्लास के द्वारा हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों से पढ़ सकते हैं।

दोष - इंटरनेट में लाखों अश्लील पन्ने भर दिए गए हैं, जिससे बच्चों के कोमल मन पर विपरीत असर पड़ रहा है। इंटरनेट के माध्यम से दूसरों की छवि बिगड़ने का कार्य भी किया जा रहा है।

28. इंटरनेट पत्रकारिता क्या है? कुछ इंटरनेट पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

उत्तर - इंटरनेट पर समाचार पर्चों का प्रकाशन व आदान-प्रदान ही इंटरनेट पत्रकारिता कहलाती है। इंटरनेट पर किसी भी रूपों में समाचारों, लेखो, चर्चा,

By Chalia Sir

परिचर्चाओं, फीचर झलकियां के माध्यम से अपने विचार रखते है और दूसरों के विचार सुनते समझते हैं, यही इंटरनेट पत्रकारिता है। टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान, राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, प्रभा साक्षी कुछ इंटरनेट पत्रिकाएं हैं।

29. इंटरनेट पत्रकारिता का इतिहास संक्षेप में लिखिए।

उत्तर - विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता को तीन भागों में बांट सकते हैं-

पहला दौर - सन् 1982 से 1992

दूसरा दौर - सन् 1993 से 2001

तीसरा दौर - सन् 2002 से अब तक।

प्रथम दौर प्रयोग का दौर था। द्वितीय दौर में इंटरनेट का बहुत विकास हुआ। जिसे देखो, वही इंटरनेट और डॉट कॉम की बात करने लगा। 2002 से इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर प्रगति के पथ पर है।

30. हिंदी में नेट पत्रकारिता के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर - हिंदी में नेट पत्रकारिता की शुरुआत 'वेब दुनिया' नामक साइट से शुरु होती है। इसके बाद इंदौर से 'नई दुनिया समूह' शुरू हुआ, जो हिंदी का पहला संपूर्ण पोर्टल है। जागरण, अमर उजाला, हिंदुस्तान टाइम्स, राजस्थान पत्रिका, आस्कर आदि ने विश्व स्तर में अपनी उपस्थिति दर्ज करनी शुरू कर दी है। प्रभासाक्षी नामक अखबार प्रिंट रूप में न होकर केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है।

31. शब्दकोश क्या है?

उत्तर - शब्दों का ऐसा समूह है या संग्रह जिसमें शब्दों की परिभाषा, अनुवाद, व्याख्या एवं उनका उच्चारण दिया गया हो, शब्दकोश कहलाता है। यह एक भाषा का दूसरी भाषा में या एक आषा का एक भाषा में ही हो सकता है, जैसे हिंदी हिंदी शब्दकोश, हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश, हिंदी - उर्दू शब्दकोश।

32. पत्रकारीय लेखन क्या है?

उत्तर - पत्रकार जनसंचार के विभिन्न माध्यमों यथा - फीचर, आलेख, रिपोर्ट आदि का उपयोग करके सूचनाओ व घटनाओ को लोगों तक पहुंचाता है इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

33. एनकोडिंग और डिकोडिंग क्या है?

उत्तर- इनकोडिंग प्रेषक द्वारा प्राप्तकर्ता को समझने योग्य कोड (भाषा) में संदेश भेजना एनकोडिंग कहलाता है।

डिकोडिंग - प्राप्तकर्ता द्वारा प्रेषक के द्वारा भेजे गए संदेश को समझ पाना ही डिकोडिंग कहलाता है।

34. क्लाइमेक्स क्या है?

उत्तर- क्लाइमेक्स किसी भी घटना अथवा सूचना का चरम बिंदु होता है। यहां से पूरी घटना का सार समझा जाता है। यह समाचार का सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है। समाचार लेखन में क्लाइमैक्स प्रारंभ में ही बता दिया जाता है। जैसे भारत की चार विकेट से जीत, बस दुर्घटना में चार की मौत आदि।

By Chalia Sir

35. हिंदी वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या क्या है?

उत्तर - हिंदी वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या उनके लेखन शैली की है क्योंकि अन्य भाषाओं की भांति हिंदी का कोई एक मानक कीबोर्ड (फॉण्ट) बाजार में उपलब्ध नहीं है। एक निश्चित रूपरेखा का कीबोर्ड नहीं होने के कारण लेखन क्रिया कठिन हो जाती है।

36. नई पीढ़ी में इंटरनेट के अधिक लोकप्रिय होने का क्या कारण है?

उत्तर - नई पीढ़ी को आप समाचार पत्र पढ़ने में आनंद नहीं आता। उन्हें स्वयं को समय-समय पर अपडेट रखने की आदत पड़ गई है। इंटरनेट पर विश्व की समस्त सूचनाओं विज्ञान व तकनीक उपलब्ध है। इंटरनेट के माध्यम से निजी वह सार्वजनिक संवाद कर सकते हैं। यही कारण है कि नई पीढ़ी इंटरनेट की दीवानी है। इंटरनेट युवाओं के लिए कनेक्टिविटी व मनोरंजन का सुगम माध्यम बन गया है।

37. जनसंचार के कौन-कौन से कार्य है? समझाइए।

उत्तर - जनसंचार के कई कार्य है। उनमें से प्रमुख कार्यों का विवरण निम्नलिखित है–

1) सूचनाएं देना - जनसंचार माध्यमों का सर्वप्रमुख कार्य सूचनाए देना है। हमें संसार भर की सूचनाएं जनसंचार माध्यमों से ही प्राप्त होती है।

2) शिक्षित करना - लोकतंत्र में जनसंचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका जनता को शिक्षित करने की है। शिक्षित करने का आशय है, उन्हें देश दुनिया के हाल से परिचित कराना और उसके प्रति सजग बनाना।

3) मनोरंजन करना - सिनेमा, टीवी, रेडियो, संगीत, टेप वीडियो और किताबै आदि मनोरंजन के प्रमुख माध्यम है।

38. जनसंचार की सबसे मजबूत कड़ी क्या है?

अथवा

जनसंचार का सबसे महत्वपूर्ण व सशक्त माध्यम क्या है?

उत्तर - जनसंचार की सबसे मजबूत कड़ी व सबसे सशक्त माध्यम पत्र पत्रिकाएं अर्थात प्रिंट मीडिया ही है। हालांकि अपने विशाल दर्शक वर्ग और तीव्रता के कारण रेडियो और टेलीविजन की ताकत ज्यादा मानी जा सकती है, लेकिन वाणी को शब्दों के रूप में रिकॉर्ड करने वाला आरंभिक माध्यम होने की वजह से प्रिंट मीडिया का महत्व हमेशा बना रहेगा। प्रिंट मीडिया ही विचार, चिंतन और विश्लेषण का माध्यम है।

39. बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में मुख्य अंतर क्या है?

उत्तर - बीट रिपोर्टिंग- बीट रिपोर्टिंग में संवाददाता का अपने विषय क्षेत्र के संबंध में सामान्य जानकारी या रुचि होना पर्याप्त है। जैसे- दुर्घटना का वर्णन।

विशेषीकृत रिपोर्टिंग - विशेषीकृत रिपोर्टिंग में विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण होता है। पत्रकार को उस विषय की विशेष जानकारी होनी आवश्यक है। जैसे खेल समाचार, शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव संबंधी समाचार आदि।

By chalia sir

40. पत्रकार का दायित्व क्या है?

उत्तर - पत्रकार का दायित्व है पाठको तथा दर्शकों तक सूचनाएं पहुंचना, उन्हें जागरूक और शिक्षित करने के साथ-साथ उनका मनोरंजन करना। पत्रकार को वस्तुपरक होना चाहिए अर्थात तथ्यों का ज्यों का त्यों विवरण प्रस्तुत करना चाहिए। उन्हें पक्षपात नहीं करना चाहिए, अपितु पक्षपात रहित रहकर संपूर्ण सूचनाओं जनता तक पहुंचानी चाहिए।

By Chalia Sir

41. संपादकीय लेखन क्या है?

उत्तर - किसी ज्वलंत मुद्दे पर संपादक और उसकी टीम द्वारा अपने विचार प्रकट किए जाते हैं उसे संपादकीय लेखन कहते हैं। यह पूरे समाचार पत्र का सार होता है। यह अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। इसी के माध्यम से किसी घटना, समस्थाएँ, मुद्दे के प्रति संपादक, उप संपादक व समाचार पत्र के अन्य कर्मचारी अपनी राय प्रकट करते हैं।

42. स्तंभ लेखन क्या है?

उत्तर - किसी ज्वलंत मुद्दे पर कोई प्रसिद्ध लेखक या विचारक अपने विचार प्रकट करता है, उसे स्तंभ लेखन कहते हैं। यह समाचार पत्र से जुड़े नहीं होते तथा एक निश्चित मानदेय पर समाचार में अपने विचार लिखते हैं। समाचार पत्र के संपादक उन लेखकों या विचारकों के विचार अखबार में स्तंभ लेखन के रूप में लिखते हैं जिन्हें पढ़ना लोग पसंद करें ताकि समाचार पत्र को और प्रसिद्धि प्राप्त हो।

43. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर - पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं -

1) पूर्णकालिक पत्रकार - यह पत्रकार अखबार के स्थाई सदस्य होते हैं तथा पूर्ण रूप से एक ही अखबार से जुड़े होते हैं।

2) अंशकालिक पत्रकार - यह किसी समाचार पत्र के स्थाई सदस्य नहीं होते बल्कि कुछ समय तक उनसे जुड़े होते हैं।

3) फ्रीलांसर - वे पत्रकार जो आवश्यकता के अनुसार भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचार पत्रों को अपनी खबरें

पहुंचाते हैं फ्रीलांसर पत्रकार कहलाते हैं।

44. इंट्रो लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर - समाचार का आमुख अर्थात इंट्रो आकर्षक और प्रभावी होना चाहिए। इसमें लेखन के चार ककारों क्या, कौन, कब, कहां का समावेश होना आवश्यक है। समाचार का क्लाइमेक्स अर्थात चरम बिंदु व समाचार का पूर्ण विवरण इंट्रो में ही बता देना चाहिए। जैसे - भारत की चार विकेट से जीत, सड़क दुर्घटना में चार घायल।

45. फिल्म में पटकथा क्या होती है?

उत्तर - फिल्म का फिल्मांकन जिस कथानक के आधार पर किया जाता है, उसे पटकथा कहते हैं। किसी भी कहानी या उपन्यास को एक-एक दृश्य के रूप में लिखकर पटकथा तैयार की जाती है, इसे स्क्रिप्ट कहते हैं। स्क्रिप्ट या पटकथा कहानी और संवाद के मध्य का लेखन कार्य होता है इसे ऐसे समझ सकते हैं -

कहानी > पटकथा > डायलॉग या संवाद > पोस्ट प्रोडक्शन

46. समाचार लेखन में स्टोरी को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - मीडिया की भाषा में किसी खबर को ही स्टोरी कहा जाता है अर्थात कोई भी बड़ी या विस्तार पूर्वक लिखी गई खबर ही स्टोरी कही जाती है। किसी समाचार पत्र में खबर के कुछ मुख्य अंश मुखपृष्ठ पर लिखे जाते हैं और शेष खबर विस्तार के अंदर के पृष्ठ पर होती है लेकिन जो खबर मुख्य पृष्ठ पर होती है उसे कवर स्टोरी कहते हैं अतः समाचार पत्र की खबरें स्टोरी का रूप है।

youtube Channel:- chalia smart study

By Chalia Sir

47. समाचार लेखन में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर - समाचार लेखन एक प्रकार की कला है इसके लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

1) समाचार लेखन में वस्तुनिष्ठ व तथ्यों की शुद्धता व सत्यता पर जोर दिया जाना चाहिए।

2) समाचार में वाक्य छोटे-छोटे व सरल भाषा में होने चाहिए।

3) समाचार में विद्वअर्थी व जटिल शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

4) समाचार लेखन में उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग होना चाहिए।

5) समाचारों में विषय की गंभीरता को ध्यान में रखकर ही अपने विचारों व तथ्यों को प्रकट करना चाहिए।

48. समाचार लेखन के कितने माध्यम है ? बताइए।

उत्तर - समाचार लेखन के वर्तमान माध्यमों को चार भागों में बांटा जा सकता है-

1) मुद्रित माध्यम - सूचनाओं को पत्र पत्रिकाओं एवं अखबारों के माध्यम से प्रसारित करना मुद्रित माध्यम कहलाता है।

2) श्रव्य माध्यम - सूचनाओं का प्रसारण रेडियो के माध्यम से करना श्रव्य माध्यम कहलाता है। इसमें केवल श्रोतागण होते हैं। यह ध्वनि स्वर शब्दों पर आधारित होता है।

3) दृश्य श्रव्य माध्यम - जब सूचनाए सुनने के साथ-साथ देखी भी जाती है तो ऐसा माध्यम दृश्य श्रव्य माध्यम कहलाता है जैसे- टी.वी.।

4) नव माध्यम - इंटरनेट जनसंचार का नव माध्यम है। इसमें मुद्रित माध्यम, श्रव्य माध्यम और श्रव्य दृश्य माध्यम तीनों का समावेश होता है।

49. संपादकीय के संपादन हेतु आवश्यक सिद्धांत लिखिए।

उत्तर - संपादकीय के संपादन हेतु निम्नलिखित सिद्धांत है-

1) तथ्यों की शुद्धता - संपादक को तथ्यों की जांच करने के बाद ही समाचार लिखने के लिए भेजना चाहिए।

2) वस्तुपरकता - संपादक को वस्तुपरक रहना चाहिए अर्थात समाचार संपादक की भावनाओं से प्रभावित नहीं होना चाहिए। 3) निष्पक्षता - संपादक को पूर्णतया निष्पक्षता के साथ समाचार को संपादित करना चाहिए

4) संतुलन - संपादक को सभी खबरों के मध्य संतुलन बनाया जाना चाहिए। खबर को महत्व के अनुसार ही रखना चाहिए

5) स्त्रोत

50. संपादकीय में वस्तुपरकता का क्या महत्व है?

उत्तर - संपादकीय का प्रमुख सिद्धांत वस्तुपरकता है। पत्रकार को संपादन करते समय अपनी स्वयं की धारणाओं और पूर्वाग्रह से मुक्त हो जाना चाहिए और अपने विषय को व्यक्त करने में वस्तु विशेष पर ध्यान रखना चाहिए इससे समाचार शुद्ध व तथ्य सही होते हैं। हमें तथ्यों का वर्णन करने में अपने पूर्वाग्रह अवधारणाएं बीच में नहीं लानी चाहिए। अपने पूर्वाग्रहों व धारणाओं से समाचार वस्तुपरकता की बजाय व्यक्तिपरक हो जाता है जिससे निष्पक्षता नहीं रह जाती।

By Challa Sir

51. साक्षात्कार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर - साक्षात्कार अथवा इंटरव्यू वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति विशेष को साक्षात करा देता है। रेडमी हाउस शब्दकोश के अनुसार - "साक्षात्कार उस वार्ता अथवा भेंट को कहा जाता है जिसमें संवाददाता (पत्रकार या लेखक) किसी व्यक्ति या किन्ही व्यक्तियों के सवाल जवाब के आधार पर किसी समाचार पत्र में प्रकाशन के लिए अथवा टेलीविजन पर प्रसारण हेतु सामग्री एकत्रित करता है।"

52. साक्षात्कार के प्रकार बताइए।

उत्तर - साक्षात्कार मौलिक रूप से दो प्रकार के होते हैं-

1) प्रतियोगितात्मकं साक्षात्कार - सेवा आयोजन द्वारा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में नौकरी के लिए किए गए साक्षात्कार इसी श्रेणी में आते हैं।

2) माध्यमोपयोगी साक्षात्कार - जनसंचार माध्यम के द्वारा जन सामान्य तक पहुंचने वाले विशिष्ट या सामान्य व्यक्ति के साक्षात्कार इस श्रेणी में आते हैं।

53. एक अच्छे साक्षात्कारकर्ता में क्या गुण होने चाहिए?

उत्तर - एक अच्छे साक्षात्कारकर्ता में नमता, व्यवहार कुशलता, जिज्ञासा, वाकपटुता, पात्र को सुनने का धैर्य, भाषा पर अधिकार तथा बात निकलवाने की कला, मनोविज्ञान का जान, बदलती परिस्थितियों के अनुसार बातचीत को मोड़ देने की कला होनी चाहिए। उसे शीघ्र लिपि (शॉर्टहैंड) का ज्ञान होना चाहिए तथा साक्षात्कारदाता के व्यक्तित्व, कृतित्व पृष्ठभूमि की समय जानकारी होनी चाहिए। संवेदनशीलता व शालीनता साक्षात्कारकर्ता के व्यक्तित्व का अंग होना चाहिए।

54. एक पत्रकार के नाते आप अखबार या टीवी दोनों में से किसके लिए साक्षात्कार करना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर- एक पत्रकार के रूप में अखबार को साक्षात्कार का माध्यम बनाना चाहूंगा क्योंकि अखबार के लिए किए गए साक्षात्कार में दाता और कर्ता के भाव-भाव, शारीरिक गतिविधियाँ, वेशभूषा का कोई महत्व नहीं होता। इस माध्यम से साक्षात्कार में सुधार की पूरी संभावनाएं होती है। इसे तुरंत प्रकाशित नहीं किया जाता बल्कि इसका कुशलतापूर्वक संपादन कर प्रभावशाली बनाया जा सकता है। इसमें समय सीमा का कोई प्रतिबंध नहीं होता।

55. "साक्षात्कार का प्रमुख आधार संवाद है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - साक्षात्कार वस्तुतः किसी विषय पर दो व्यक्तियों की बातचीत को कहा जाता है और बातचीत का आधार संवाद होता, है तो संवाद उसका अभिन्न अंग है। साक्षात्कार में दो व्यक्तियों की भूमिका होती है, एक साक्षात्कार लेने वाला और दूसरा साक्षात्कार देने वाला। इन दोनों के मध्य किसी विषय समस्या या मुद्दे को लेकर वार्तालाप होता है। यह वार्तालाप प्रश्नात्मक शैली में होता है और इसकी भाषा पाठक व श्रोतागण को ध्यान में रखकर चुनी जाती है। संवाद शैली और प्रभावपूर्ण सरल भाषा साक्षात्कार के प्राण है।

56. निम्नलिखित पर टिप्पणी कीजिए-

1) वाणिज्यिक पत्रकारिता - देश की आर्थिक प्रगति एवं विश्लेषण की दृष्टि से वाणिज्यिक पत्रकारिता को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है इसके माध्यम से औद्योगिक और व्यवसाय जगत में होने वाले बदलावों सुधारो नीतियों और उतार-चढ़ाव का ज्ञान प्राप्त होता है। देश की आर्थिक व्यवस्था का पूर्ण विश्लेषण किया जाता है।

2) अपराध समाचार - अपराधों से संबंधित पुलिस कार्यवाही और न्याय प्रक्रिया पर आधारित समाचार अपराध समाचार की श्रेणी में आते हैं। अपराध समाचार के लिए अपराध के साक्ष्य व पुलिस व न्याय व्यवस्था की प्रक्रिया का पूर्ण जान होना अत्यंत आवश्यक है।

3) अदालती समाचार - अदालत की कार्यवाही से जुड़े समाचार अदालती समाचार कहलाते हैं। अपराधी को पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया जाना न्याय प्रक्रिया के तहत उस कार्यवाही, बहस, दंड प्रक्रिया, वकीलों और जजों के मंतव्य को अदालती समाचार के अंतर्गत रखा जाता है।

By Chaila Sir

4) खेल समाचार - खेल समाचार खेल जगत से संबंधित होते हैं। आधुनिक युग में विभिन्न प्रकार के खेल प्रचलित है इन खेर्ता का विवरण, खिलाड़ियों की संपूर्ण जानकारी, खेल संगठनों की जानकारी, उनका विश्व स्तरीय रिकॉर्ड, नियम, खिलाड़ियों के रोमांचकारी प्रदर्शन, संभावित मैचो की जानकारी को समाचार पत्र में खेल पृष्ठ पर स्थान दिया जाता है।

5) विज्ञान पत्रकारिता - हिंदी पत्रकारिता विज्ञान के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन हो रहे शोध कार्यों, अंतरिक्ष अनुसंधानों, चिकित्सा, विज्ञान से जुडी सूचनाओं, प्राकृतिक आपदाओं के पूर्वानुमानों, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की नवीनतम जानकारी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है, तो उसे विज्ञान पत्रकारिता कहा जाता है।

6) फिल्म पत्रकारिता - फिल्म जगत से संबंधित समाचार लेखन फिल्म पत्रकारिता कहलाता है। इसमें कथा पटकथा, फिल्म निर्माण, अभिनेता अभिनेत्री, स्थान, फिल्म का उद्देश्य, समाज पर प्रभाव आदि का विचार विश्लेषण किया जाता है। फिल्म निर्माण से संबंधित जानकारी, फिल्म के निर्माण में सलग्न लोगों की भूमिका, फिल्म की सफलता असफलता, सामयिक संदेश का उल्लेख भी फिल्म पत्रकारिता में किया जाता है।

7) खोजपरक पत्रकारिता- इस प्रकार की पत्रकारिता को खोजी पत्रकारिता कहते हैं क्योंकि इस पत्रकारिता में गहराई से छानबीन करके ऐसे तथ्यों और सूचनाओं को प्रस्तुत किया जाता है, जिन्हें छिपाने या दबाने के प्रयास किया जा रहे हो। वर्तमान में इस पत्रकारिता को स्टिंग ऑपरेशन के द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है।

8) विशेषीकृत पत्रकारिता - घटनाओं में गहराई तक जाकर उनका अर्थ स्पष्ट करना व पाठकों को उसका महत्व बताना विशिष्ट कार्य है। इस प्रकार की पत्रकारिता विशेषीकृत या विशेषता से युक्त पत्रकारिता कहलाती है। इसमें न्याय क्षेत्र, अर्थ क्षेत्र, फिल्म आदि विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त करनी पड़ती है।

9) वॉच डॉग पत्रकारिता - लोकतंत्र में पत्रकारिता और समाचार मीडिया का मुख्य उत्तरदायित्व सरकार के प्रत्येक कामकाज पर निगरानी रखना है। किसी भी स्थान पर कोई गड़बड़ी हो तो उसे सभी के सामने प्रस्तुत करना फोटो पत्रकारिता कहलाती है।

10) एडवोकेसी पत्रकारिता - ऐसे अनेक प्रकार के समाचार संगठन जो किसी विचारधारा या मुद्दे का पक्ष लेकर जनमत बनाने का अभियान सा चलते हैं उसे पक्षधर या एडवोकेसी पत्रकारिता कहते हैं।

11) वैकल्पिक पत्रकारिता - जब मीडिया स्थापित व्यवस्था के अनुसार तालमेल बिठाकर चलता है तो वह मुख्य धारा का मीडिया कहलाता है व इसके विपरीत मीडिया को वैकल्पिक पत्रकारिता कहते हैं।

57. पत्रकारिता लेखन प्रक्रिया क्या है? समझाइए।

उत्तर - पत्रकारिता लेखन करने का उचित ढंग पत्रकारिता की प्रक्रिया को दर्शाता है। पत्रकारिता लेखन से जुड़े लोग विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं, जो निम्नलिखित है-

1) उल्टा पिरामिड शैली में समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं। इसमे मुख्य समाचार सबसे पहले फिर महत्व के अनुसार घटते क्रम में समाचार लिखे जाते हैं।

2) ककारों का प्रयोग - पत्रकारिता में लेखक ककारों का प्रयोग करते हुए लेखन करता है। इसमें क्या, कौन, कब, कहां, क्यों, कैसे प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है और पूरे समाचार को प्रस्तुत किया जाता है।

3) विशेष लेखन - किसी खास घटना के लिए अन्य सामान्य खबरों से हटकर किया गया लेखन विशेष लेखन कहलाता है।

4) इन डेप्थ रिकॉर्ड - इस प्रक्रिया में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचना और आंकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है। विश्लेषणात्मक रिपोर्ट पर जोर दिया जाता है। किसी विवरण में घटना या रिपोर्ट की बारीक समस्या को प्रस्तुत करने की कोशिश की जाती है।

58. पत्रकारिता के विभिन्न आयाम कौन से हैं?

उत्तर - पत्रकारिता के विभिन्न आयाम निम्नलिखित है-

1) संपादकीय

2) फोटो पत्रकारिता

By Chalia Sir

3) कार्टून कोना

4) रेखांकन व कार्टोग्राफी

59. रिपोर्ट और रिपोर्ताज में अंतर बताइये।

उत्तर - रिपोर्ट अंग्रेजी भाषा का शब्द है और रिपोर्ट आज फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। किसी घटना का तथ्यात्मक लेखा जोखा रिपोर्ट कहलाता है और जब इस रिपोर्ट को कलात्मक साहित्यिक शैली में कल्पना व संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया जाए तो उसे रिपोर्ताज कहा जाता है।

60. डेस्क किसे कहते हैं?

उत्तर - समाचार पत्रों और पत्रिकाओं टीवी और रेडियो चैनल में विशेष लेखन की व्यवस्था को डेस्क कहते हैं और उसे विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का भी अलग समूह होता है तथा व्यापार कारोबार तथा खेल के लिए अलग-अलग टेस्ट निर्धारित होता है क्योंकि इसका क्षेत्र बहुत विस्तृत होता है इसलिए अलग-अलग विभाग के लिए अलग-अलग देश होती है जिससे लेखन कार्य व्यवस्थित तरीके से पूर्ण हो सके।

61. टी. वी. में ध्वनियों का क्या महत्व है?

उत्तर - टी.वी. में दृश्य और शब्द के अलावा ध्वनियों भी होती हैं। टी.वी. में दृश्य और शब्द-यानी विजुअल और वॉयस ओवर (वीओ) के साथ दो तरह की आवाजें और होती हैं। एक तो वे कथन या बाइट जो खबर बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं और दूसरी वे प्राकृतिक आवाजें जो दृश्य के साथ-साथ चली आती है-यानी चिड़ियों का चहचहाना या फिर गाड़ियों के गुज़रने की आवाज़ या फिर किसी कारखाने में किसी मशीन के चलने की ध्वनि।

61. इंटरनेट को जनसंचार का नया माध्यम कहा जाता है। क्यों?

उत्तर - इंटरनेट एक ऐसा माध्यम है जिसमें प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविज़न, किताब, सिनेमा यहाँ तक कि पुस्तकालय के सारे गुण मौजूद हैं। इसकी पहुँच व रफ़्तार का कोई जवाब नहीं है। इसमें सारे माध्यमों का समागम है। यह एक अंतरक्रियात्मक माध्यम है यानी आप इसमें मूक दर्शक नहीं हैं। इसमें आप बहस कर सकते हैं, ब्लाग के जरिए अपनी बात कह सकते हैं। इसने विश्व को ग्राम में बदल दिया है। इसके बुरे प्रभाव भी हैं। इस पर अश्लील सामग्री भी बहुत अधिक है जिससे समाज की नैतिकता को खतरा है। दूसरे, इसका दुरुपयोग अधिक है तथा सामाजिकता कम होती जाती है।

62. जनसंचार माध्यमों के लाभ व हानि बताइए।

उत्तर - जनसंचार माध्यम के निम्नलिखित लाभ हैं-

यह हमारे दैनिक जीवन में शामिल हो गया है। धर्म से लेकर सेहत तक की जानकारी मिल रही है।

इससे मानव जीवन सरल, समर्थ व सक्रिय हुआ है। सूचनाओं व जानकारियों के कारण लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूती मिली है। सरकारी कामकाज पर निगरानी बढ़ी है।

इसकी हानियाँ निम्नलिखित हैं इसने काल्पनिक जीवन को बढ़ावा दिया है। इससे पलायनवादी प्रवृनि बढ़ रही है। समाज में अश्लीलता व असामाजिकता बढ़ रही है। गलत मुद्दों को जबरदस्त प्रचार के जरिए सही ठहराया जाता है।

63. संपादन का अर्थ बताइए।

उत्तर - संपादन का अर्थ है-किसी सामग्री से उसकी अशुद्धियों को दूर करके उसे पठनीय बनाया। एक उपसंपादक अपनी रिपोर्टर की खबर को ध्यान से पढ़कर उसकी भाषागत अशुद्धियों को दूर करके प्रकाशन योग्य बनाता है।

By Chahal Sir

64. पत्रकार की बैसाखियाँ कौन-कौन-सी हैं?

उत्तर - पत्रकार की बैसाखियों निम्नलिखित हैं - संदेह करना, सच्चाई, संतुलन, निष्पक्षता, स्पष्टता।

65. संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - संपादकीय पृष्ठ को समाचार पत्र का सबसे महत्वपूर्ण पृष्ठ माना जाता है। इस पृष्ठ पर अखबार विभिन्न घटनाओं और समाचारों पर अपनी राय रखता है। इसे संपादकीय कहा जाता है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ महत्वपूर्ण जनसंचार माध्यम और लेखन मुद्दों पर अपने विचार लेख के रूप में प्रस्तुत करते हैं। आमतौर पर संपादक के नाम पत्र भी इसी पृष्ठ पर प्रकाशित किए जाते हैं। वह घटनाओं पर आम लोगों की टिप्पणी होती है।

66. समाचार माध्यमों के मौजूदा रुझान पर टिप्पणी करें।

उत्तर - देश में मध्यम वर्ग के तेज़ी से विस्तार के साथ ही मीडिया के दायरे में आने वाले लोगों की संख्या भी तेज़ी से बढ़ रही है। साक्षरता और क्रय शक्ति बढ़ने से भारत में अन्य वस्तुओं के अलावा मीडिया के बाज़ार का भी विस्तार हो रहा है। इस बाजार की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए हर तरह के मीडिया का फैलाव हो रहा है-रेडियो, टेलीविज़न, समाचारपत्र, सेटेलाइट टेलीविज़न और इंटरनेट सभी विस्तार के रास्ते पर हैं लेकिन बाज़ार के इस विस्तार के साथ ही मीडिया का व्यापारीकरण भी तेज हो गया है और मुनाफा कमाने को ही मुख्य ध्येय समझने वाले पूँजीवादी वर्ग ने भी मीडिया के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर प्रवेश किया है।

67. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता पर टिप्पणी करें।

उत्तर - भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का अभी दूसरा दौर चल रहा है। भारत के लिए पहला दौर 1993 से शुरु माना जा सकता है, जबकि दूसरा दौर सन् 2003 से शुरू हुआ है। पहले दौर में हमारे यहाँ भी प्रयोग हुए। डॉटकॉम का तूफान आया और बुलबुले की तरह फूट गया। अंततः वही टिके रह पाए जो मीडिया उद्योग में पहले से ही टिकें। हुए थे। आज पत्रकारिता की दृष्टि से 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'हिंदुस्तान टाइम्स', 'इंडियन एक्सप्रेस', 'हिंदू', 'ट्रिब्यून', 'स्टेट्समैन', 'पॉयनियर', 'एनडीटी, वी.', 'आईबीएन', 'जी न्यूज', 'आजतक' और 'आउटलुक' की साइटें ही बेहतर हैं। 'इंडिया टुडे' जैसी कुछ साइटें भुगतान के बाद ही देखी जा सकती हैं। जो साइटें नियमित अपडेट होती हैं, उनमें 'हिंदू', 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया', 'आउटलुक', 'इंडियन एक्सप्रेस', 'एनडीटी. वी.', 'आजतक' और 'जी न्यूज़' प्रमुख है। लेकिन भारत में सच्चे अर्थों में यदि कोई वेब पत्रकारिता कर रहा है तो वह 'रीडिफ़ डॉटकॉम', 'इंडियाइंफोलाइन' व 'सीफी' जैसी कुछ ही साइटें हैं। रीडिफ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है जो कुछ गंभीरता के साथ इंटरनेट पत्रकारिता कर रही है। वैब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डॉटकॉम' को जाता है।

By chalia sir

68. हिंदी नेट संसार पर टिप्पणी करें।

उत्तर - हिंदी में नेट पत्रकारिता 'वेब दुनिया' के साथ शुरू हुई। इंदौर के नई दुनिया समूह से शुरू हुआ यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है। इसके साथ ही हिंदी के अखबारों ने भी विश्वजाल में अपनी उपस्थिति दर्ज करानी शुरु की। 'जागरण', 'अमर उजाला', 'नई दुनिया', 'हिंदुस्तान', 'भास्कर', 'राजस्थान पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'प्रभात खबर' व 'राष्ट्रीय सहारा' के वेब संस्करण शुरू हुए। 'प्रभासाक्षी' नाम से शुरू हुआ अखबार, प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के लिहाज से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट बीबीसी की है। यही एक साइट है जो इंटरनेट के मानदंडों के हिसाब से चल रही है। वेब दुनिया ने शुरू में काफ़ी आशाएँ जगाई थी, लेकिन धीरे-धीरे स्टाफ और साइट की अपडेटिंग में कटौती की जाने लगी जिससे पत्रकारिता की वह ताज़गी जाती रही जो शुरू में नज़र आती थी।

69. इंटरनेट पत्रकारिता सूचनाओं को तत्काल उपलब्ध कराता है, परंतु इसके साथ ही उसके कुछ दुष्परिणाम भी हैं। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - जिस तरह से हर विषय के पक्ष और विपक्ष होते हैं, उसी प्रकार इंटरनेट के भी दो पक्ष हैं। इंटरनेट पत्रकारिता से हमें सूचनाएँ तत्काल उपलब्ध हो जाती हैं। परंतु इसके साथ ही उसके कुछ दुष्परिणाम। भी हैं। इंटरनेट जहाँ सूचनाओं के आदान-प्रदान का बेहतरीन औजार है, वहीं। वह अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का। भी ज़रिया है। इसके साथ। ही यह अत्यंत महँगा साधन भी है।

By Chalia Sir

70. श्रोताओं या पाठकों को बाँधकर रखने की दृष्टि से प्रिंट माध्यम, रेडियो और टी०वी० में से सबसे सशक्त माध्यम कौन है? उत्तर - श्रोताओं या पाठकों को बाँधकर रखने की दृष्टि से प्रिंट माध्यम, रेडियो और टी०वी० में से सबसे सशक्त माध्यम है -टी.वी. - टी.वी. पर समाचार सुनाई देने के साथ-साथ दिखाई भी देते हैं, जिससे सजीवता आती है और यह दर्शकों को बाँधे रखता है। यह साक्षर-निरक्षर दोनों ही तरह के दर्शकों के लिए उपयोगी होते हैं। कम समय में अधिक व विभिन्न जगहों के समाचार दिखाए जा सकते हैं। समाचारों को अलग-अलग तरह से रुचिकर बनाकर दिखाया जाता है।

Youtube channel:- chalia smart study

71. डेडलाइन किसे कहते हैं?

उत्तर - अखबार 24 घंटे में एक बार या साप्ताहिक पत्रिका सप्ताह में एक बार प्रकाशित होती है। अखबार या पत्रिका में समाचारी या रिपोर्ट को प्रकाशन के लिए स्वीकार करने की एक निश्चित समय-सीमा होती है, जिसे डेडलाइन कहते हैं।

72. मुद्रित माध्यमों में लेखक को जगह (स्पेस) का ध्यान क्यों रखना चाहिए?

उत्तर - मुद्रित माध्यमों में लेखक को जगह (स्पेस) का पूरा ध्यान रखना चाहिए। जैसे किसी अखबार या पत्रिका के संपादक ने अगर आपको 250 शब्दों में रिपोर्ट या फीचर लिखने को कहा है तो आपको उस शब्द सीमा का ध्यान रखना पड़ेगा। इसकी वजह यह है कि अखबार या पत्रिका में असीमित जगह नहीं होती। साथ ही उन्हें विभिन्न विषयों और मुद्दों पर सामग्री प्रकाशित करनी होती है। महत्व और जगह की उपलब्धता के अनुसार वे निश्चित करते हैं कि किसे कितनी जगह मिलेगी।

73. मुद्रित माध्यमों में लेखन में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर - मुद्रित माध्यमों में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें -

1. लेखन में भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शैली का ध्यान रखना ज़रूरी है। प्रचलित भाषा के प्रयोग पर ज़ोर रहता है।

2. समय-सीमा और आवंटित जगह के अनुशासन का पालन करना हर हाल में जरूरी है।

3. लेखन और प्रकाशन के बीच गलतियों और अशुद्धियों को ठीक करना ज़रूरी होता है।

4. लेखन में सहज प्रवाह के लिए तारतम्यता बनाए रखना जरूरी है

74. इंटरनेट पर पत्रकारिता के कौन से रूप हैं?

उत्तर - इंटरनेट पर पत्रकारिता के भी दो रूप हैं। पहला तो इंटरनेट का एक माध्यम या औजार के तौर पर इस्तेमाल, यानी खबरों के संप्रेषण के लिए इंटरनेट का उपयोग। दूसरा, रिपोर्टर अपनी खबर को एक जगह से दूसरी जगह तक ईमेल के जरिये भेजने और समाचारों के संकलन, खबरों के सत्यापन और पुष्टिकरण में भी इसका इस्तेमाल करता है।

75. इंटरनेट पत्रकारिता से आपका क्या आशय है?

उत्तर - इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर यदि हम, किसी भी रूप में खबरों, लौं, चर्चा-परिचर्चाओं, बहसों, फीचर, झलकियों, डायरियों के जरिये अपने समय की धड़कनों को महसूस करने और दर्ज करने का काम करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है। आज तमाम प्रमुख अखबार पूरे के पूरे इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। कई प्रकाशन समूहों ने और कई निजी कंपनियों ने खुद को इंटरनेट पत्रकारिता से जोड़ लिया है। चूंकि यह एक अलग माध्यम है, इसलिए इस पर पत्रकारिता का तरीका भी थोड़ा-सा अलग है।

By Chalia Sir

76. इंटरनेट का महत्व व उपयोगिता -

उत्तर - इंटरनेट एक अंतरक्रियात्मक माध्यम है। यानी इसमें आप मूक दर्शक नहीं है। आप सवाल जवाब बहस में भाग ले सकते हैं। आप चैट कर सकते हैं। ब्लोग बनाकर मन मुताविक पत्रकारिता कर सकते हैं। इंटरनेट ने हमें समागम की स्थिति में पहुंचा दिया है। इंटरनेट ने पढ़ने लिखने वाले लोगों के लिए संभावनाओं के द्वारा खोल दिए हैं।

★ अन्य तथ्य:-

👉 ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना हुई - 1936 में

👉 FM (frequency modulation) - 1993

👉 भारत में विधिवत टी.वी. सेवा प्रारंभ हुई - 1965 में

👉 समाचार लेखन में रुढ़िवादिता नहीं होनी चाहिए।

👉 लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना गया है - पत्रकारिता को

👉 समाचार का सबसे महत्वपूर्ण पृष्ठ माना गया है - संपादकीय पृष्ठ

👉 वेब पत्रकारिता को ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता, इंटरनेट पत्रकारिता भी कहते हैं।

👉 भारत की पहली साइट कौन सी है - rediff.com (रेडिफ)

👉 संचार प्रक्रिया में आने वाली बाधा - नोएज (शोर)

👉 सिनेमा के आविष्कारक - थॉमस एल्वा एडिसन

👉 विश्व की पहली फिल्म - द अराइवल ऑफ ट्रेन

👉 भारत की पहली फिल्म - राजा हरिश्चंद्र -1913 (दादा साहब फाल्के द्वारा)

👉 भारत की पहली बोलती फिल्म आलम आरा (1931)

By Chalia Sir

प्रश्न:- 1. संचार क्या है ?

उत्तर - 'संचार' शब्द की व्युत्पत्ति 'चर' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है - चलना या एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचना। संचार सिर्फ दो व्यक्तियों तक सीमित परिघटना नहीं है। यह हज़ारों-लाखों लोगों के बीच होने वाले जनसंचार तक विस्तृत है। अतः सूचनाओं, विचारों और भावनाओं को लिखित, मौखिक या दृश्य-श्रव्य माध्यमों के जरिए सफलतापूर्वक एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना ही संचार है और इस प्रक्रिया को अंजाम देने से मदद करने वाले तरीके संचार माध्यम कहलाते हैं।

प्रश्न:- 2. संचार के विभिन्न प्रकार बताइए।

उत्तर - संचार एक जटिल प्रक्रिया है। उसके कई रूप या प्रकार हैं जो निम्नलिखित हैं -

(क) मौखिक संचार:- एक-दूसरे के सामने वाले इशारे या क्रिया को मौखिक संचार कहते हैं। इसमें हाथ की गति, आँखों व चेहरे के भाव, स्वर के उतार-चढ़ाव आदि क्रियाएँ होती हैं।

(ख) अंतरवैयक्तिक संचार:- जब दो व्यक्ति आपस में और आमने-सामने संचार करते हैं तो इसे अंतरवैयक्तिक संचार कहते हैं। इस संचार की मदद से

आपसी संबंध विकसित करते हैं और रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करते हैं। संचार का यह रूप पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों की बुनियाद है।

(ग) समूह संचार:- इसमें एक समूह आपस में विचार-विमर्श या चर्चा करता है। कक्षा-समूह इसका अच्छा उदाहरण है। इस रूप का प्रयोग समाज और देश के सामने उपस्थित समस्याओं को बातचीत और बहस के जरिए हल करने के लिए होता है।

(घ) जनसंचार:- जब व्यक्तियों के समूह के साथ संवाद किसी तकनीकी या यांत्रिकी माध्यम के जरिए समाज के एक विशाल वर्ग से किया जाता है तो इसे जनसंचार कहते हैं। इसमें एक संदेश को यांत्रिक माध्यम के जरिए बहुगुणित किया जाता है ताकि उसे अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचाया जा सके। रेडियो, अखबार, टीवी, सिनेमा, इंटरनेट आदि इसके माध्यम है।

प्रश्न: 3. जनसंचार की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर - जनसंचार की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

1) जनसंचार माध्यमों के जरिए प्रकाशित या प्रसारित संदेशों की प्रकृति सार्वजनिक होती है।

2) जनसंचार के लिए औपचारिक संगठन होता है।

3) इस माध्यम के लिए अनेक द्वारपाल होते हैं। द्वारपाल वह व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह है जो जनसंचार माध्यमों से प्रकाशित या प्रसारित होने वाली सामग्री को नियंत्रित और निर्धारित करता है।

प्रश्न: 4. जनसंचार के कार्य बताइए।

उत्तर:- जनसंचार के कार्य निम्नलिखित हैं-

सूचना देना, शिक्षित करना, मनोरंजन करना, एजेंडा तय करना, निगरानी करना, विचार-विमर्श के मंच।

By chalia sir

प्रश्न: 5. पत्रकारिता किसे कहते हैं?

उत्तर:- प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन या इंटरनेट के जरिए खबरों के आदान-प्रदान को ही पत्रकारिता कहा जाता है। इसके तीन पहलू है - समाचार संकलन, संपादन व प्रकाशन।

प्रश्न: 6. समाचार क्या है?

उत्तर:- समाचार किसी भी ऐसी ताज़ा घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट है जिसमें अधिक-से-अधिक लोगों की रुचि हो और जिसका अधिक-से-अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा है।

प्रश्न:- 7. समाचार के तत्व कौन से हैं?

उत्तर:- समाचार के निम्नलिखित तत्व होते हैं-

नवीनता, निकटता, प्रभाव, जनरुचि, टकराव, महत्वपूर्ण लोग, अनोखापन, पाठक वर्ग, नीतिगत ढाँचा।

By Chalia Sir

प्रश्न:- 8. संचार के तत्व -

1. संचारक संदेश लिखने वाला

2. एनकोडिंग (कुटीकृत) - प्राप्तकर्ता को समझने योग्य भाषा में लिखना

3. सन्देश

4. माध्यम

5. प्राप्तकर्ता (रिसीवर)

6. डिकोडिंग संचारक के लिखे संदेश को समझने की कोशिश

7. फीडबैंक प्राप्तकर्ता द्वारा सन्देश पर अपनी प्रतिक्रिया देना

By Chalia Sir